मासिक

गुरमत ज्ञान

३/-

आश्विन-कार्तिक संवत् नानकशाही ५५४ अक्तूबर 2022 वर्ष १६ अंक २

विशेषांक

साका श्री पंजा साहिब

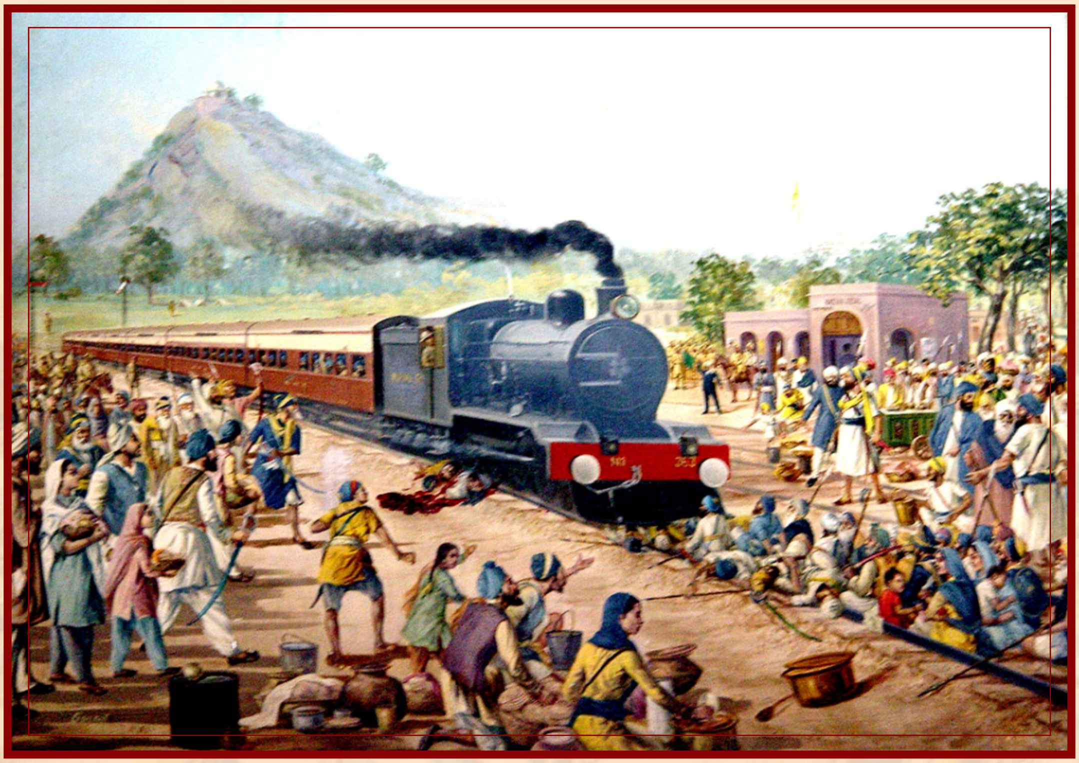

मल्ल लई! मल्ल लई! मल्ल लई!
ख़ालसे ने रत्त डोल के, गड्डी ठल्ल लई!

गुरुद्वारा साहिब गुरु का बाग़ पातशाही पाँचवीं,
गांव घुक्केवाली, जिला श्री अमृतसर साहिब

गुरुद्वारा साहिब गुरु का बाग़ पातशाही नौवीं,
गांव घुक्केवाली, जिला श्री अमृतसर साहिब

ੴ सतिगुर प्रसादि॥
गुर गिआन अंजनु सचु नेत्री पाइआ॥
अंतरि चानणु अगिआनु अंधेरु गवाइआ॥

मासिक

गुरमत ज्ञान

आश्विन-कार्तिक, संवत् नानकशाही 554
वर्ष 16 अंक २ अक्तूबर 2022

मुख्य संपादक : सिमरजीत सिंघ
संपादक : सतविंदर सिंघ
सहायक संपादक : जगजीत सिंघ

चंदा

सालाना (देश)	10 रुपये
आजीवन (देश)	100 रुपये
सालाना (विदेश)	250 रुपये
प्रति कापी	3 रुपये

चंदा भेजने का पता
सचिव, धर्म प्रचार कमेटी
(शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी)
श्री अमृतसर साहिब -143006
फोन : 0183-2553956-60
एक्सटेंशन नंबर
वितरण विभाग 303 संपादन विभाग 304
फैक्स : 0183-2553919
e-mail : gyan_gurmat@yahoo.com
website : www.sgpc.net

ISSN 2394-8485

विषय-सूची

गुरबाणी विचार	4
संपादकीय	5
स्री गुर रामदास जयो जय जग महि -डॉ. परमजीत कौर	7
बंदी छोड़ दिवस की ऐतिहासिकता एवं महानता -डॉ. कशमीर सिंघ 'नूर'	12
सुलतान-उल-कौम सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया -डॉ. मनजीत कौर	16
सिक्खी सिद्धांतों के प्रकाश में साका श्री पंजा साहिब . . . -डॉ. सत्येन्द्र पाल सिंघ	20
साका श्री पंजा साहिब -डॉ. राजेंद्र सिंघ 'साहिल'	25
सर गंगा राम और गुरुद्वारा गुरु का बाग का मोर्चा -डॉ. परमवीर सिंघ	28
. . . भाई करम सिंघ साका श्री पंजा साहिब वाले -डॉ. हरप्रीत कौर	30
. . . माता हरनाम कौर का संक्षिप्त जीवन-परिचय -डॉ. रणजीत कौर पंनवां	36
सहज सुभाइ होवै सो होइ - स. जोगिंदर सिंघ	44
खबरनामा	48

गुरबाणी विचार

कतिकि करम कमावणे दोसु न काहू जोगु ॥
परमेसर ते भुलिआं विआपनि सभे रोग ॥
वेमुख होए राम ते लगनि जनम विजोग ॥
खिन महि कउड़े होइ गए जितड़े माइआ भोग ॥
विचु न कोई करि सकै किस थै रोवहि रोज ॥
कीता किछू न होवई लिखिआ धुरि संजोग ॥
वडभागी मेरा प्रभु मिलै तां उतरहि सभि बिओग ॥
नानक कउ प्रभु राखि लेहि मेरे साहिब बंदी मोच ॥
कतिक होवै साधसंगु बिनसहि सभे सोच ॥ ९ ॥ *(पन्ना १३५)*

बाणी के बोहिथ पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी महाराज बारह माहा मांझ की इस पावन पउड़ी में कार्तिक मास की सुहावनी बहार में मनुष्य-मात्र को अपना अमूल्य मनुष्य-जन्म सफल करने का मार्ग बख्शिश करते हैं।

सतिगुरु जी फरमान करते हैं कि यदि जीवन की कार्तिक मास की सुहावनी ऋतु में परमात्मा के मिलाप हेतु जीव कर्म करने से अथवा नाम-सिमरन से वंचित रह गया तो इसमें किसी का क्या दोष है ? यह दोष उस जीव पर ही लागू होना चाहिए जो प्राय: अनुकूल परिस्थितियां होने के बावजूद भी प्रभु-नाम जपने की दिशा में गतिशील नहीं होता। सतिगुरु जी स्पष्ट करते हैं कि ऐसी स्थिति में जीव परमात्मा को भूल जाता है और परमात्मा के भूल जाने से ही जीव को सभी प्रकार के अर्थात् शारीरिक और मानसिक रोग लग जाते हैं। प्रभु से मुंह मोड़ लेने से जन्म-वियोग अर्थात् अत्यंत लंबा बिछोड़ा मिलता है। प्रभु-नाम को भूल कर जीव माया के भोग भोगता है जो कि प्रभु भूल जाने पर यकदम कड़वे लगने लग जाते हैं। जीव की ऐसी दुखदायक स्थिति किसी बाहरी प्रयास से बदल नहीं सकती। वह किसके पास प्रतिदिन अपना दुख व्यक्त करे ? मात्र बाहरी प्रयास फलदायक नहीं होते और प्रभु मालिक ही जीव के उद्धार का संयोग बनाता है। अच्छे भाग्य हों, तभी मालिक से मिलाप होता है, जिससे जन्मों का वियोग भी दूर हो जाता है। सतिगुरु प्रभु से विनती करते हैं कि हे बंधनों से मुक्त करने वाले मालिक ! मुझको इस भौतिक संसार की माया के प्रभाव से बचा लेना। यदि कार्तिक की सुहावनी ऋतु में अच्छे मनुष्यों का साथ मिल जाए तो प्रभु से जुदा रखने वाली सारी चिंताएं दूर हो जाती हैं।

संपादकीय

शांतमयी सिक्ख संघर्ष का प्रतीक : साका श्री पंजा साहिब

सिक्ख धर्म का उदय ज़ुल्म और अन्याय के अंधेरे को दूर करने के लिए युगपुरुष, जगद्-गुरु श्री गुरु नानक देव जी महाराज के विशेष यत्नों और उनके विलक्षण तेजस्वी व्यक्तित्व के कारण हुआ था। गुरु जी से हक, सच और न्याय को स्थापित करने का मूल गुण लेकर श्री गुरु नानक नाम-लेवा सिक्खों ने उसे अपने जीवन और चरित्र का अभिन्न अंग बना लिया। इसके अंतर्गत गुरु के सिक्खों ने मध्य काल से लेकर आज तक अनगिनत कुर्बानियां दी, जो देश, कौम, मानवता व सरबत्त के भले के लिए थीं। सिक्ख इतिहास साकों, घल्लूघारों, युद्धों, संघर्षों और अनगिनत प्रकार की जद्दोजहद के साथ भरा पड़ा है। देश, कौम और मानवता के भले हेतु कुर्बानियां करने में सिक्ख सारी दुनिया में प्रसिद्ध हैं और अपनी मिसाल आप ही हैं। इनमें साका श्री पंजा साहिब एक है, जो कि सिक्ख शूरवीरता, बहादुरी, दृढ़ता, हिम्मत, हक, सच, न्याय के सवाल पर सिक्खों द्वारा मर-मिटने की भावना की एक अद्वितीय उदाहरण है। इसका वृत्तांत पाठकों-श्रोताओं के रौंगटे खड़े कर देने वाला है। इसे पढ़ने-सुनने के लिए भी बड़े साहस की ज़रूरत चाहिए।

गुरु-चरणों के स्पर्श से तृप्त हुए श्री पंजा साहिब के स्थान को चिर-काल से ही विश्व-प्रसिद्धि हासिल है। सिक्खों के लिए ख़ास तौर पर वह प्रत्येक स्थान पवित्र है, जहाँ दस गुरु साहिबान में से किसी भी गुरु साहिब के चरण पड़े हों। कुछ ऐसे ख़ास स्थान भी हैं जहाँ गुरु साहिबान ने अपने विस्मयकारी कृत्य किए।

गुरु नानक पातशाह के आगमन से पहले पश्चिमी पंजाब का यह स्थान नीम पहाड़ी और शुष्क इलाका था, जहाँ बालू और झाड़ियां आदि थीं। यहाँ एक पहाड़ी पर वली कंधारी नामक एक मुस्लिम फ़कीर रहता था, जो कि अपने रूहानी ज्ञान और तप का बड़ा अहंकार किया करता था। वास्तव में गुरु जी उसे ही सच्चा रूहानी मार्ग दिखाने के लिए यहाँ पधारे थे। गुरु जी ने भाई मरदाना जी को वली कंधारी से जल मांगने हेतु भेजा। उसने अहंकारवश होकर भाई मरदाना जी को जल देने से मना कर दिया। गुरु जी ने वहां पर जल का चश्मा प्रकट किया। वली कंधारी ने पहाड़ी के नीचे विराजमान गुरु जी और भाई मरदाना जी पर पहाड़ी पर से एक बड़ा पत्थर फेंक कर उन्हें नुकसान पहुंचाने का भद्दा यत्न किया। आत्मिक शक्ति से पूर्णत: अचल और शांतचित्त गुरु जी ने उसको अपने हाथ से रोक लिया और वली कंधारी को निर्मल उपदेश देकर उसका काया-कल्प किया। सिक्ख संगत इस प्रसंग से भली-भांति अवगत है। इस स्थान की महिमा हर युग में बुलंद रही है और आने वाले हर युगों में भी रहेगी।

देश की आज़ादी के लिए संघर्ष ज़ोरों पर था। इस संघर्ष में गुरु जी के नाम-लेवा सिक्ख बढ़-चढ़ कर अपना योगदान दे रहे थे। इसी संघर्ष के अंतर्गत समय की विदेशी मूल की अंग्रेज़ी सरकार, गुरुद्वारा गुरु

का बाग के मोर्चे में भाग लेने वाले कैदी बनाए गए सिक्खों को दूर स्थित अटक जेल में भेज रही थी। ३० अक्तूबर, १९२२ ई. वाले दिन प्रातः काल १० बजे गाड़ी श्री पंजा साहिब के रेलवे स्टेशन से गुजरनी थी।

श्री पंजा साहिब नगर में निवास करने वाले सिक्खों को जैसे ही इसके बारे में पता चला कि गाड़ी द्वारा भेजे जा रहे सिक्ख कई दिन से भूखे और प्यासे रखे हुए हैं, तो उन सिक्खों ने उन कैदी सिक्खों को श्री पंजा साहिब रेलवे स्टेशन पर गाड़ी रोक कर परशादा-पानी छकाने का इरादा कर लिया। भावना बहुत ही पवित्र और निर्मल थी कि जिस स्थान पर श्री गुरु नानक पातशाह ने अपने सिक्ख भाई मरदाना जी की तीव्र प्यास शांत की थी उस स्थान से आज़ादी के दीवाने सिक्ख भूखे-प्यासे नहीं जाने चाहिए।

इस सम्बन्ध में उन्होंने रेलवे विभाग के अधिकारियों के साथ संपर्क स्थापित किया। जब सरकारी अधिकारियों से उन्हें गाड़ी रोके जाने की स्वीकृति न मिली तो उन्होंने इस उद्देश्य के लिए अपनी जान कुर्बान कर देने का इरादा कर लिया।

गाड़ी रुकवाने के लिए गुरु के सच्चे सिक्ख अपने परिवारों सहित अर्थात् स्त्रियों और बच्चों संग रेल पटड़ी पर लेट गए। गाड़ी के चालक ने कुछ दूरी से रेल-पटड़ी पर लेटी हुई संगत को देख तो लिया, मगर उसने गाड़ी न रोकी। गाड़ी संगत के साथ टकरा कर रुक गई। भाई करम सिंघ और भाई प्रताप सिंघ गंभीर रूप से घायल हो गए और कुछ समय बाद शहीद हो गए। अन्य कुछ सिक्ख घायल हो गए।

कैसा होगा वह दृश्य, जब एक तरफ भाई प्रताप सिंघ और भाई करम सिंघ आखिरी सांसें गिन रहे थे; घायल सिक्खों की संभाल की जा रही थी और दूसरी तरफ भूखे-प्यासे कैदी सिक्खों को लंगर छकाने के लिए गुरु के नाम-लेवा सिक्ख लगे हुए थे; आखिरी सांसों पर पहुंचे दोनों सिक्ख— भाई प्रताप सिंघ और भाई करम सिंघ सतिगुरु का शुक्राना कर रहे थे कि उनका मकसद पूरा हुआ है। उनके इरादे को गुरु ने अपनी कृपा द्वारा पूरा किया था। घायल सिक्खों को भी यह कहते सुना गया कि ''जाओ! संगत को परशादा-पानी छकाओ! हमारी चिंता मत करो!'' ऐसा साका विश्व-इतिहास में अपनी उदाहरण आप ही है।

यह ऐतिहासिक घटना ३० अक्तूबर, १९२२ ई. को घटित हुई, जिसे शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा (प्रथम) शताब्दी के रूप में मनाया जा रहा है। इस सम्बन्ध में 'गुरमत ज्ञान' का यह अंक इस साके को समर्पित विशेषांक के रूप में पाठकों के सम्मुख किया गया है। साहस, धैर्य और दृढ़ता के प्रतीक इस ऐतिहासिक साके की याद में हमने जहाँ उन सिक्ख शहीदों एवं महान कुर्बानी करने वाले सिक्खों को श्रद्धा-सुमन अर्पित करने हैं, वहीं हमें वर्तमान समय में मौजूद भाँति-भाँति के अत्याचार व अन्याय के ख़िलाफ़ शांतमयी संघर्ष भी जारी रखना होगा!

स्री गुर रामदास जयो जय जग महि

*-डॉ. परमजीत कौर**

तीनों भवनों में जिनका यशोगान होता है, ऐसे करण कारण समर्थ श्री गुरु रामदास जी के बारे में भट्ट बल्य जी का यह बल्य कथन है:

तीनि भवन भरपूरि रहिओ सोई ॥
अपन सरसु कीअउ न जगत कोई ॥
आपुन आपु आप ही उपायउ ॥
सुरि नर असुर अंतु नही पायउ ॥
पायउ नही अंतु सुरे असुरह
नर गण गंध्रब खोजंत फिरे ॥
अबिनासी अचलु अजोनी संभउ
पुरखोतमु अपार परे ॥
करण कारण समरथु सदा सोई
सरब जीअ मनि ध्याइयउ ॥
स्री गुर रामदास जयो जय जग महि
तै हरि परम पदु पाइयउ ॥ (पन्ना १४०५)

भट्ट सल्य जी की दृष्टि में श्री गुरु रामदास जी स्वयं परमेश्वर हैं :

तू सतिगुरु चहु जुगी आपि आपे परमेसरु ॥
सुरि नर साधिक सिध सिख सेवंत धुरह धुरु ॥
(पन्ना १४०६)

सांझीवालता के प्रेरक श्री गुरु रामदास जी का जीवन तथा बाणी अज्ञानता के अन्धकारपूर्ण मार्ग पर अग्रसर मानवता के लिए प्रकाश-स्तंभ है। श्री गुरु रामदास जी ने तीस रागों में बाणी उच्चारण कर गुरसिक्खों को जीवन जीने का ढंग सिखाया है।

गुरु जी का आगमन चूना मंडी, लाहौर में २५ आश्विन, कार्तिक वदी २, संवत् १५९१, तद्नुसार २४ सितंबर, १५३४ ई. को पिता श्री हरिदास जी तथा माता श्रीमती दया कौर जी के घर में हुआ। छोटी आयु में ही माता-पिता का निधन हो जाने के कारण आपका बाल्य-काल संघर्षमयी रहा। १२ वर्ष की आयु में आप जी गोइंदवाल साहिब में बस गए। श्री गुरु रामदास जी के विनम्र स्वभाव तथा सेवा-भावना से प्रभावित होकर श्री गुरु अमरदास जी ने गुरुआई पर सुशोभित होने के एक वर्ष बाद अपनी सुपुत्री बीबी भानी जी का विवाह श्री गुरु रामदास जी के साथ कर दिया। उस समय श्री गुरु रामदास जी की आयु लगभग १९ वर्ष थी। आप जी तन-मन से गुरु-घर तथा साधसंगत की सेवा में जुट गए। रात-दिन बाउली (बावली) साहिब की सेवा में लगे रहते थे। गुरमति में सेवा का बहुत बड़ा महत्त्व

**६२०, गली नं. १, छोटी लाईन, संतपुरा, यमुनानगर (हरियाणा)-१३५००१, फोन : ९८१२३-५८१८६*

है। सेवा करते समय केवल सेवा की भावना ही मन में रखनी चाहिए। श्री गुरु रामदास जी ने सिखाया है कि पवित्र हृदय से अहंकार की भावना से रहित होकर की गयी सेवा ही कबूल होती है :

— विचि हउमै सेवा थाइ न पाए ॥

(पन्ना १०७१)

— हरि का मारगु गुर संति बताइओ
गुरि चाल दिखाई हरि चाल ॥
अंतरि कपटु चुकावहु मेरे
गुरसिखहु निहकपट कमावहु
हरि की हरि घाल निहाल निहाल निहाल ॥

(पन्ना ९७८)

गिनती करते हुए की गयी सेवा अभिमान का कारण बनती है तथा निष्फल हो जाती है :

गणतै सेव न होवई कीता थाइ न पाइ ॥

(पन्ना १२४६)

श्री गुरु रामदास जी ने श्री गुरु अमरदास जी की आज्ञा के अनुसार बिना किसी सवाल-जवाब के बार-बार थड़े को बनाकर तथा गिराकर गुरु के प्रति श्रद्धा-प्रेम बनाए रखने तथा आज्ञा मानने का ढंग सिखाया और समझाया कि मनुष्य अपने जीवन में चाहे बहुत कुछ प्राप्त कर ले, उच्च पदवियां प्राप्त कर ले, मगर उसे विनम्रता नहीं छोड़नी चाहिए।

आप अपनी सूझबूझ, तीव्र बुद्धि, विनम्र स्वभाव तथा मधुर वाणी से सबको प्रभावित कर लेते थे। श्री गुरु अमरदास जी द्वारा स्थापित लंगर-प्रथा की शोभा से परेशान तथा जाति का अभिमान करने वाले लोगों ने श्री गुरु अमरदास जी के विरुद्ध अकबर बादशाह के पास शिकायत की तथा गुरु जी पर कई दोष भी लगाए। बादशाह अकबर ने अपना पक्ष रखने के लिए सतिगुरु जी को बुलाया। श्री गुरु अमरदास जी ने गुरु-घर का पक्ष रखने के लिए अपने स्थान पर भाई जेठा जी (श्री गुरु रामदास जी) को भेजा। आप जी ने गुरु-घर के आदर्शों को इस तरह स्पष्ट किया कि अकबर भी प्रभावित हुए बिना न रह सका। आप जी ने विनम्रता सहित बादशाह को प्रेरित किया कि तीर्थों पर दर्शनार्थ जाने वाले यात्रियों से अधिक कर न लिया जाए।

भट्ट कल्य सहार जी गुरु जी की स्तुति करते हुए कहते हैं कि उच्च मति मानों गुरु जी की माता है तथा संतोष पिता है :

मति माता संतोखु पिता सरि सहज समायउ ॥

(पन्ना १३९७)

गुरु-पद पर विराजमान हुए तो वैराग्य में आकर बोले कि पातशाह ! मैं तो एक कीट के समान था। आपने कृपा तथा स्नेह से मुझ को बड़ा सहारा दिया है :

जो हमरी बिधि होती मेरे सतिगुरा
सा बिधि तुम हरि जाणहु आपे ॥
हम रुलते फिरते कोई बात न पूछता

गुर सतिगुर संगि कीरे हम थापे ॥ (पन्ना १६७)

भट्ट कल्य सहार जी के मतानुसार श्री गुरु रामदास जी ने श्री गुरु अमरदास जी की सेवा कर उच्च पदवी प्राप्त की है तथा अविनाशी परमेश्वर का सिमरन किया है। श्री गुरु रामदास जी की शरण में आने से दरिद्रता दूर हो जाती है :

सतिगुरु सेवि परम पदु पायउ ॥
अबिनासी अबिगतु धिआयउ ॥
तिसु भेटे दारिद्रु न चंपै ॥
कल्य सहारु तासु गुण जंपै ॥ (पन्ना १३९६)

श्री गुरु रामदास जी प्रभु-प्रेम के महत्त्व का प्रतिपादन करते हुए समझाते हैं कि हृदय में प्रभु-प्रेम न हो तो परमात्मा को हृदय में नहीं बसाया जा सकता और न ही भक्ति की जा सकती है। मन में प्रेम की भावना तभी पैदा होती है जब केवल परमात्मा को ही हृदय में बसाया जाए। परमात्मा के अतिरिक्त किसी दूसरे के प्रति मोह से मन में वैराग्य पैदा नहीं होता और वैराग्य के बिना प्रेम नहीं हो सकता :

— जिना अंदरि दूजा भाउ है
तिन्हा गुरमुखि प्रीति न होइ ॥ (पन्ना ३१६)
— जिन सरधा राम नामि लगी
तिन्ह दूजै चितु न लाइआ राम ॥
जे धरती सभ कंचनु करि दीजै
बिनु नावै अवरु न भाइआ राम ॥ (पन्ना ४४४)

प्रभु-प्रेम का अर्थ है— मन, वचन तथा कर्म से हर समय परमात्मा को याद रखना। श्री गुरु रामदास जी का फरमान है :

हरि राम बोलहु हरि साधू हरि के जन साधू जगदीसु जपहु मनि बचनि करमि हरि हरि आराधू हरि के जन साधू ॥
हरि राम बोलि हरि राम बोलि
सभि पाप गवाधू ॥ (पन्ना १२०१)

मन को प्रभु के प्रेम-रंग में रंगने के लिए हृदय-घर को काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, निंदा आदि विकारों से मुक्त करना जरूरी है, तभी मन स्थिर हो सकता है :

परहरि काम कोधु झूठु निंदा
तजि माइआ अहंकारु चुकावै ॥
तजि कामु कामिनी मोहु तजै
ता अंजन माहि निरंजनु पावै ॥ (पन्ना १४१)

भट्ट कल्य सहार जी गुरु जी की स्तुति करते हुए कहते हैं कि श्री गुरु रामदास जी की आत्मा हरि के प्रेम-रंग में रंगी हुई है। उनका मन जगा हुआ है। उन्होंने परमात्मा को हृदय में ही देख लिया है :

सतगुर मति गूढ़ बिमल सतसंगति
आतमु रंगि चलूलु भया ॥
जाग्या मनु कवलु सहजि परकास्या
अभै निरंजनु घरहि लहा ॥ (पन्ना १३९६)

श्री गुरु रामदास जी समझाते हैं कि परमात्मा के नाम का जाप नौका है, जिसके

सहारे जीव दुखों से निवृत्त होकर संसार समुद्र को पार कर सकता है :

कलिजुग का धरमु कहहु तुम भाई
किव छूटह हम छुटकाकी ॥
हरि हरि जपु बेड़ी हरि तुलहा
हरि जपिओ तरै तराकी ॥ (पन्ना ६६८)

अपने जन्म को सफल करने के लिए, नाम-सिमरन के मार्ग पर चलने के लिए सर्वप्रथम मन को समझाना जरूरी है। गुरु साहिब मन को समझाते हैं कि जगह-जगह भटकने वाले हे परदेसी मन! तू सदैव दौड़ता रहता है। परमात्मा के चरणों में जुड़ने के लिए मन का स्थिर होना आवश्यक है :

मेरे मन परदेसी वे पिआरे आउ घरे ॥
हरि गुरू मिलावहु मेरे पिआरे घरि वसै हरे ॥
(पन्ना ४५१)

जिनके अंदर प्रभु का नाम बस जाता है, वे किसी के मोहताज नहीं होते। परमात्मा की कृपा से उनके सारे कार्य पूर्ण हो जाते हैं :

जिना अंदरि नामु निधानु हरि
तिन के काज दयि आदे रासि ॥
तिन चूकी मुहताजी लोकन की
हरि प्रभु अंगु करि बैठा पासि ॥ (पन्ना ३०५)

जिस सिमरन की बरकत से परमात्मा के साथ प्रीति बनी रहती है, वह सिमरन ही जप, तप, व्रत तथा पूजा है :

सो जपु सो तपु सा ब्रत पूजा
जितु हरि सिउ प्रीति लगाइ ॥ (पन्ना ७२०)

भक्त कल्य सहार जी के अनुसार श्री गुरु रामदास जी हृदय रूपी खाली सरोवर को नाम-जल से भरने वाले हैं, नाम-रसिक हैं :

हरि नाम रसिकु गोबिंद गुण
गाहकु चाहकु तत समत सरे ॥
कवि कल्य ठकुर हरदास तने
गुर रामदास सर अभर भरे ॥ (पन्ना १३९६)

श्री गुरु रामदास जी के दर्शन करने से मन शान्त हो जाता है, पाप नष्ट हो जाता है, हृदय के विकार आदि समाप्त हो जाते हैं : —

संतोख सरोवरि बसै अमिअ
रसु रसन प्रकासै ॥
मिलत सांति उपजै दुरतु दूरंतरि नासै ॥
(पन्ना १३९७)

जिन पर गुरु प्रसन्न हो जाता है, उनके हृदय में प्रभु के नाम का प्रकाश हो जाता है अहंकार दूर हो जाता है। जिन पर प्रभु कृपा करते हैं, उनको 'शबद' से जोड़कर संसार-सागर से पार लगा देते हैं :

गुरु जिन्ह कउ सुप्रसंनु नामु हरि रिदै निवासै ॥
जिन्ह कउ गुरु सुप्रसंनु दुरतु दूरंतरि नासै ॥
गुरु जिन्ह कउ सुप्रसंनु मानु अभिमानु निवारै ॥
जिन्ह कउ गुरु सुप्रसंनु सबदि लगि भवजलु तारै ॥
(पन्ना १३९८)

जिन मनुष्यों ने सतिगुरु रामदास जी से प्रेम किया है वे सतिगुरु के शबद की बरकति से

मुक्त हो गए हैं। भट्ट कल्य सहार जी के शब्दों में गुरु साहिब ने 'शबद' का नगाड़ा बजाया है :

ते मुकते भए सतिगुर सबदि
मनि गुर परचा पाइअउ ॥
गुर रामदास कल्युचरै तै सबद नीसानु बजाइअउ ॥ (पन्ना १३९७)

जो मनुष्य मन में पूर्ण विश्वास रखकर प्रेम सहित श्री गुरु रामदास जी का स्मरण करते हैं, भट्ट बल्य कहते हैं कि उनके मन में से काम, क्रोध आदि विकार समाप्त हो जाते हैं। जो वाणी द्वारा स्तुति करते हैं, उनका दुख, दरिद्रता दूर हो जाती है। जो मनुष्य आपका दर्शन शारीरिक इंद्रियों द्वारा करते हैं, वे पारस के समान हो जाते हैं। आपकी जय-जयकार जगत में हो रही है। आपने हरि की उच्च पदवी प्राप्त कर ली है :

मनसा करि सिमरंत तुझै नर
कामु क्रोधु मिटिअउ जु तिणं ॥
बाचा करि सिमरंत तुझै
तिन्ह दुखु दरिद्रु मिटयउ जु खिणं ॥
करम करि तुअ दरस परस पारस सर
बल्य भट जसु गाइयउ ॥
स्री गुर रामदास जयो जय जग महि
तै हरि परम पदु पाइयउ ॥ (पन्ना १४०५)

आप जी ने सारा जीवन कठोर साधना की तरह बिताया। आप जी की बाणी वैराग्य व प्रेम से भरपूर है तथा "हरि हरि अंम्रितु पी त्रिपतासे सभ लाथी भूख भुखानी" का संदेश देती हुई यह दृढ़ करवाती है कि गुरु की शिक्षा के अनुसार चलता हुआ जीव जीवन की सही दिशा प्राप्त कर लेता है। जीवों के अंदर भड़क रही माया की तृष्णा की आग गुरु-शबद के ज्ञान तथा विचार से ही शान्त की जा सकती है। भट्ट बल्य जी के अनुसार जिस गुरु का सिमरन करने से हृदय में परमात्मा का नाम दिनोदिन प्रफुल्लित होता है, मन शांत हो जाता है, ऋद्धियां-सिद्धियां प्राप्त हो जाती हैं। जिस गुरु की शरण में जाने से प्रभु-मिलाप होता है, उस गुरु (श्री गुरु रामदास जी) का सिमरन करो तथा संगत के साथ मिलकर धन्य-धन्य कहो :

जिह सतिगुर सिमरंत
नयन के तिमर मिटहि खिनु ॥
जिह सतिगुर सिमरंथि रिदै हरि नामु दिनो दिनु ॥
जिह सतिगुर सिमरंथि जीअ की तपति मिटावै ॥
जिह सतिगुर सिमरंथि
रिधि सिधि नव निधि पावै ॥
सोई रामदासु गुरु बल्य
भणि मिलि संगति धंनि धंनि करहु ॥
जिह सतिगुर लगि प्रभु पाईऐ
सो सतिगुरु सिमरहु नरहु ॥ (पन्ना १४०५)

बंदी छोड़ दिवस की ऐतिहासिकता एवं महानता

*-डॉ. कशमीर सिंघ 'नूर'**

हम सभी सिक्खों का कर्त्तव्य है कि हम अपने बच्चों को श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के फलसफे, गुरु साहिबान जी के जीवन के बारे में, गुरमति विचारधारा एवं सिक्खी के ऊँचे व सच्चे सिद्धांतों के बारे में, सभी बाणीकारों के महत्त्वपूर्ण योगदान के विषय में अवगत करवाते रहें, ताकि वे सिक्ख धर्म में आस्था बनाए रखें तथा इसमें परिपक्व हों। हमें उन्हें बताना चाहिए कि संसार के सभी सिक्ख प्रत्येक वर्ष दीपावली पर्व को 'बंदी छोड़ दिवस' के रूप में श्रद्धापूर्वक एवं हर्षोल्लास के साथ मनाते हैं, क्योंकि हमारे छठे गुरु श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी मध्य प्रदेश के जिला ग्वालियर के किले की कैद से अन्य बावन राजाओं को साथ लेकर रिहा हुए थे। फिर सिक्ख संगत के साथ दीपावली के दिन श्री हरिमंदर साहिब श्री अमृतसर पहुंचे थे। जहांगीर की कैद में से रिहा होने की खुशी में श्रद्धालु सिक्ख संगत ने श्री हरिमंदर साहिब सहित पूरे शहर में दीपमाला की और उत्सव मनाया। दीपावली की रात थी तथा गुरु जी स्वयं इस उत्सव में शामिल हुए थे। तब से आज तक सभी सिक्ख दीपावली पर्व को 'बंदी छोड़ दिवस' के रूप में मनाते आ रहे हैं।

श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी को उस समय के मुगल शासक जहांगीर द्वारा बंदी क्यों बनाया गया, इसके पीछे एक ऐतिहासिक पृष्ठभूमि है। हमारा उस पृष्ठभूमि के बारे में जानना भी बहुत जरूरी है। यह तो हम जान ही चुके हैं कि उनकी रिहाई को 'बंदी छोड़ दिवस' के रूप में मनाया जाता है।

श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी की बढ़ती लोकप्रियता और महिमा तथा उनके द्वारा बनाई गई अपनी निजी सेना की वजह से जहांगीर बहुत चिढ़ने लगा था। वह गुरु जी को गिरफ्तार करने के लिए बहाने ढूंढने लगा। 'महिमा प्रकाश' ग्रंथ गवाही देता है कि जहांगीर इस बात से भी काफी दुखी था कि दुनिया उनके दर्शन करने के लिए आती है और उन्हें 'सच्चा पातशाह' कहती है :

सभ संगत जिस दरशन को आवै।
कहि सच्चे पातशाह गुन गावै।
सुन जहांगीर मन महि रिसावै।
जतन करे कुझ हाथ नाह आवै।

गुरु जी ने पहले लोहगढ़ नामक किला बनाया। फिर श्री हरिमंदर साहिब के सामने संप्रभुता-स्वायत्तता के प्रतीक श्री अकाल तख्त साहिब की स्थापना की। जहांगीर ने एलान किया

**बी-एक्स-१२५, संतोखपुरा, हुशियारपुर रोड, जलंधर-१४४००४, फोन : ९८७२२-५४११०*

हुआ था कि कोई भी व्यक्ति अपना निजी चबूतरा भी दो फुट से ऊँचा नहीं बना सकता। ऐसे में गुरु जी ने धरा से १२ फुट ऊँचा 'तख़्त' बनाया। लोग अपने-अपने वाद लेकर गुरु जी के पास श्री अकाल तख़्त साहिब पर उपस्थित होने लगे। गुरु जी सभी को सही व सच्चा न्याय देते थे। लोग अति प्रसन्न थे और उन्हें 'सच्चा पातशाह' कहने लगे थे। लोगों ने न्याय के लिए लाहौर व दिल्ली शासन की ओर ताकना बंद कर दिया। श्री अकाल तख़्त साहिब की महानता, मान्यता और प्रतिष्ठा बढ़ने लगी। उधर बादशाह जहांगीर गुरु जी को गिरफ्तार करने के मंसूबे गढ़ने लगा।

श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी द्वारा लोहगढ़ का किला बनाना, श्री अकाल तख़्त साहिब को स्थापित करना, विरोधी सेना में से नाम काटे गए स्वाभिमानी सैनिकों को अपनी सेना में शामिल करना, अपनी अदालत में वादों के निर्णय करना और इससे भी बढ़कर लोगों को स्वतंत्रता, आत्मगौरव प्राप्त करने हेतु प्रेरित करना— ये सब काम जहांगीर द्वारा गुरु जी की गिरफ्तारी का आदेश देने के लिए पर्याप्त थे।

विद्वान सी. एच. पेन लिखता है— ''गुरु जी के शाही ठाठ एवं सेना ने जहांगीर को चिंतित किया और उसने आदेश दे दिया कि श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब को गिरफ्तार कर ग्वालियर के किले में भेज दिया जाए।''

इसी संबंध में इतिहासकार कनिंघम लिखता है— ''गुरु जी का अपना अलबेला स्वभाव और युद्ध करने हेतु लगाव उनकी गिरफ्तारी का कारण बना। गुरु जी कुश्ती लड़ते तथा खेल खेलते हुए आनंद लेते थे। इन्हीं लगाव व रुचियों ने गुरु जी को शिकार करने एवं सैनिक जीवन व्यतीत करने की ओर प्रेरित किया।''

प्रिंसिपल सतिबीर सिंघ के अनुसार, सी. एच. पेन ने एक अन्य कारण भी बताया है। वह कहता है— ''श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ही एक ऐसे इन्सान थे, जो पिता श्री गुरु अरजन देव जी की शिक्षाओं पर चलने को समर्थ थे। (अर्थात् उत्तराधिकारी के रूप में योग्य थे।) वे जाते समय कह गए थे कि सिक्ख धर्म सत्य, प्रेम, गौरव तथा आज़ादी का रक्षक बनता आया है। तब तक जूझते-लड़ते रहना, जब तक ज़ालिम खत्म न हो जाएं या सुधर न जाएं। श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब की भी यही इच्छा थी कि मज़लूमों को ज़ालिमों के हाथों से छुड़वाया जाए। ऐसे वीर योद्धा तैयार किए जाएं जो प्रत्येक खतरे के आगे डटकर खड़े हो सकें और कुर्बानी के लिए तत्पर रहें। ऐसे आज़ादी वाले तथा भड़काने वाले विचार सरकार सहन नहीं कर सकती थी। गुरु जी को गिरफ्तार करने के लिए उन्होंने निराधार दोष लगाने शुरू कर दिए।''

उपरोक्त विचारों के आलोक में कहा जा सकता है कि वर्तमान समय में भी दुनिया की कई सरकारों ने लोगों की आज़ादी, सम्मान, गौरव प्राप्त करने की इच्छा को दमनात्मक ढंग से कुचलने व दबाने में कोई कसर नहीं छोड़ी है। सच बोलने, सच लिखने वालों को दमनात्मक कार्रवाइयों द्वारा खामोश कर दिया जाता है।

बहुसंख्यक वर्ग द्वारा अल्पसंख्यक वर्ग पर जुल्म करना आज भी जारी है। इस सब पर मानवाधिकार संगठनों द्वारा चुप्पी साध लेना घोर निंदनीय है।

श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब को गिरफ्तार कर लिया गया और उन्हें ग्वालियर के किले में भेज दिया गया। जिस कोठरी में उन्हें बंदी बनाकर रखा गया वह सबसे ऊपर की मंजिल (छत) पर स्थित थी। आलगीर द्वार को लांघकर उस कोठरी को 'मान मंदिर' में अब भी देखा जा सकता है। यह किला ग्वालियर शहर के पूरब में स्थित है तथा इसे शहर के किसी भी छोर से देखा जा सकता है।

गुरु जी द्वारा किले में आने पर वहां कैद किए गए सभी कैदियों में खुशी की लहर दौड़ गई। उन कैदियों में अधिकतर वही राजा थे, जिन्हें बगावत के दोष में अनिश्चित समय के लिए बंदीगृह में डाला गया था। बंदी बनाए गए राजाओं की हालत अति दयनीय थी। वे तंग आकर अपना आत्मसम्मान, आत्मविश्वास खो चुके थे। जब उन्होंने श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब को अपने बीच देखा तो उनके मन में नया विश्वास पैदा हुआ। रिहाई की आशा दिखाई देने लगी। 'महिमा प्रकाश' के शब्दों में :

बड़े लोक बंद तह रहे।
सतिगुरु पास आन सभ बहे।
जब लग दरसन प्रभ का करें।
चिंता सोक देखत पर हरें।

गुरु जी ने बंदीगृह के कर्मचारियों द्वारा भेजा गया भोजन खाने से मना कर दिया। जेल के दारोगा हरिदास ने ग्वालियर शहर के एक सिक्ख श्रमिक, जो हरी घास बेचा करता था, के घर का बना भोजन लाने का प्रबंध कर दिया। गुरु जी को पता था कि जेल प्रशासन द्वारा दिए जाते भोजन में कच्चा जहर मिलाया जाता है। वे हर बात का ध्यान रखते थे। गुरु जी जब तक जेल में रहे, तब तक बाहर से ही भोजन आता रहा। दारोगा हरिदास ने पहले से ही गुरु जी की शोभा सुन रखी थी, अत: उनके चरणों से जुड़कर सिक्ख बन गया।

गुरु जी ग्वालियर में कैद थे, इस कारण सिक्खों में बेचैनी बढ़ने लगी। बाबा बुड्ढा जी तथा भाई गुरदास जी की आगवानी में सिक्खों ने बैठकें आयोजित करनी शुरू की। रात के समय मशालें जलाकर सिक्ख गुरु-शबद पढ़ते, जुलूस निकालते और रोष-प्रदर्शन करते। यह सब शांतिपूर्वक किया जा रहा था। कई जत्थे (दल) पंजाब से चलकर ग्वालियर पहुंचते। किले की दीवारों को स्पर्श कर, परिक्रमा कर वापिस लौटते। न्यायप्रिय मुसलमानों ने निवेदन लिखकर जहांगीर तक पहुंचाए कि गुरु जी को रिहा किया जाए। विशेष तौर पर वज़ीर खान तथा साँई मियां मीर जी ने स्वयं आगरा पहुंचकर जहांगीर को प्रेरित किया कि श्री गुरु हरिगोबंद साहिब जी को बंदीगृह में से आज़ाद किया जाए। दूसरी ओर कपटी दीवान चंदू अपने मंद मंसूबों को पूरा करने की योजनाएं बनाने लगा। उसने पहले विषाक्त चोला भेजा। फिर दारोगा

हरिदास को भी अपने साथ मिलाने की कोशिश की, किंतु उसने पूरी बात अपने इष्ट गुरु जी को बता दी कि कमीना चंदू कैसी-कैसी कमीनी हरकतें कर रहा है। उसने गुरु जी को सावधान रहने की प्रार्थना की।

आखिर संगत के आक्रोश को देखते हुए वज़ीर खान एवं साँई मियां मीर जी के प्रभावाधीन जहांगीर ने गुरु जी की रिहाई का आदेश जारी कर दिया। जहांगीर भी समझ गया था कि ज्यादा देर तक यह विरोध की लहर रोकी नहीं जा सकती। गुरु जी के साथ मेल-मिलाप रखना ही उचित रहेगा।

जब वज़ीर खान (हकीम अलीमुद्दीन अन्सारी, निवासी चिनुट) गुरु जी की रिहाई का आदेश लेकर ग्वालियर पहुंचा तो गुरु जी ने रिहा होने से स्पष्ट मना कर दिया। उन्होंने फरमान किया कि जब तक निर्दोष ५२ कैदी राजाओं को भी रिहा नहीं किया जाता, तब तक वे यहां से बाहर निकलने के लिए तैयार नहीं।

वज़ीर खान पुनः वापिस आगरा आया और जहांगीर को समझाने का प्रयास किया। पहले तो जहांगीर माना नहीं, लेकिन फिर उसे वज़ीर खान की तर्कपूर्ण बातें माननी ही पड़ी और उसने ५२ कैदी राजाओं को भी रिहा करने का आदेश भेज दिया। इस आदेश में उसने शर्त रख दी कि जो कोई भी गुरु जी के चोले को पकड़कर बाहर आएगा, उसे ही रिहा किया जाएगा। 'महिमा प्रकाश' ग्रंथ वर्णन करता है :

''जो दामन पकड़ गुर बाहर आवै।
सो भए खलास अपने घर जावै।''

गुरु जी के कहे अनुसार उनके लिए ५२ कलियों (लड़ियों) वाला विशेष चोला सिलवाया गया। प्रत्येक कली की डोरी को एक-एक राजा ने पकड़ा और वे रिहा हुए। इस घटना के विषय में सुनकर सिक्ख संगत एवं अन्य लोगों ने श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी को 'बंदी छोड़ दाता' कहना शुरू कर दिया।

गुरु जी रिहा हुए। सिक्खों के हृदय को शांत करते हुए, सिक्ख धर्म का प्रचार करते हुए श्री अमृतसर पहुंचे और श्री हरिमंदर साहिब में दीपावली का त्योहार 'बंदी छोड़ दिवस' रूप में मनाया गया। तभी से रिवायत के अनुसार प्रत्येक वर्ष 'बंदी छोड़ दिवस' सिक्खों द्वारा पूरे उत्साह, उल्लास, श्रद्धा व हर्ष के साथ मनाया जाता है।

हम सभी को छठे पातशाह, बंदी छोड़ दाता जी द्वारा दिखाए गए मार्ग पर चलकर ईर्ष्या, द्वेष, घृणा, झूठ, फरेब, घमंड, बेईमानी जैसे अवगुणों की कैद में से स्वयं को मुक्त करना है। धर्म, परोपकार, प्रेम, सद्भावना, ईमानदारी, सच्चाई जैसे सद्गुणों को आत्मसात किए रखना है। बंदी छोड़ दिवस की महानता को सही अर्थों और भाव में समझने की आवश्यकता है!

सुलतान-उल-कौम सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया

-डॉ. मनजीत कौर*

गुरबाणी का पावन फरमान है— *''आपि लीए लड़ि लाइ दरि दरवेस से॥ तिन धंनु जणेदी माउ आए सफलु से॥''* श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के पन्ना ४८८ पर सुशोभित इन पावन पंक्तियों में बाबा शेख फरीद जी का कथन है कि ''ईश्वर के द्वार के दरवेश (फकीर) तो वही हैं जिनको खुदा ने स्वयं कबूल किया है। उनको जन्म देने वाली उनकी माँ भी धन्य है और उन्हीं का संसार में आना सफल माना जाता है।''

सिक्ख इतिहास में ऐसे शूरवीर योद्धा हुए हैं जो एक ही समय में बहुमुखी गुणों के धारक हुए हैं। इनकी विलक्षणता है— दृढ़ता, भक्ति-शक्ति, समर्पण, देश-धर्म हेतु न्यौछावर होने का जज्बा, शीश तली पर रख कर लड़ना, बंद-बंद कटवाना, आरे से तन चिरवाना, खोपड़ी उतरवाना, जमूरों से मांस नुचवाना, देगों में उबल जाना...। दुनिया में सिक्खों की लासानी शहादतों की मिसाल अन्य कहीं नहीं मिलती। सिक्ख कौम अकाल पुरख वाहिगुरु की फौज है। इस कौम को श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने अपनी सूरत और सीरत प्रदान की है और बड़े फख्र से कहा है :

खालसा मेरो रूप है खास।
खालसे महि हउं करों निवास।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के परम ज्योति में विलीन होने के दस वर्ष पश्चात् तथा बाबा बंदा सिंघ बहादुर की शहादत के दो वर्ष पश्चात् गांव आहलू, जिला लाहौर में कलाल खानदान में सरदार बदर सिंघ तथा माता जीवन कौर के घर सन् १७१८ ई. में सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया का जन्म हुआ। इनकी माता बहुत ही धार्मिक प्रवृत्ति की थीं। दो-तारा वाद्य-यन्त्र बजा कर अपने मधुर कंठ से बड़ी तन्मयता के साथ गुरबाणी का कीर्तन करतीं। संगत इनके रूहानी कीर्तन से आनन्दित होती। इस बालक के सिर से पिता का साया बहुत ही छोटी उम्र में उठ गया। पति के परलोक सिधार जाने के कुछ समय पश्चात् सिक्ख संगत के साथ माता जीवन कौर अपने पुत्र सरदार जस्सा सिंघ को लेकर दिल्ली चले गए और वहां माता सुंदरी जी के सान्निध्य में रहने लगे। माता सुंदरी जी की शरण में सरदार जस्सा सिंघ को कीर्तन की

*२/१०४, जवाहर नगर, जयपुर-३०२००४, फोन : ९९२९७-६२५२३

दात के रूप में सेवा करने का आशीर्वाद प्राप्त हुआ। माता जी के संरक्षण में सरदार जस्सा सिंघ को गुरमति का ज्ञान, विविध भाषाओं की शिक्षा, सिक्ख विचारधारा का बहुपक्षीय ज्ञान प्राप्त हुआ। साथ ही सरदार जस्सा सिंघ का अहोभाग्य था कि दिल्ली से वापिस लौटते समय गुरु कलगीधर पिता श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के पावन कर-कमलों का स्पर्श-प्राप्त शस्त्र— तीर-कमान, कृपाण आदि की बख्शिश माता सुंदरी जी से सरदार जस्सा सिंघ को प्राप्त हुई।

ऊपर वाले के रहमो-कर्म, सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया अपनी माता जी एवं मामा सरदार बाघ सिंघ के साथ नवाब कपूर सिंघ के पास पहुंच गए। 'जौहरी को ही हीरे की परख होती है।' नवाब कपूर सिंघ सरदार जस्सा सिंघ के व्यक्तिव से बहुत प्रभावित हुए और उनकी माता जी से आग्रह किया कि इस बालक को उनके पास ही छोड़ दिया जाए। माता जी ने सहर्ष अपने सुपुत्र को उनके सुपुर्द कर दिया।

नवाब कपूर सिंघ की देखरेख में सरदार जस्सा सिंघ की शिक्षा-दीक्षा हुई, जिसमें घुड़सवारी, नेजाबाजी, तीरंदाजी, तेग चलाने की कला आदि के प्रशिक्षण के साथ-साथ सिक्खी के स्तम्भ—सेवा व सिमरन के गुणों से नवाजा गया। सरदार जस्सा सिंघ सिमरन करने के साथ-साथ संगत में पंखा झुलाने तथा बर्तन साफ करने की सेवा बहुत ही श्रद्धा-भावना एवं प्रेम से करते। युवावस्था में नवाब कपूर सिंघ द्वारा इन्हें अमृत-पान करवाया गया तथा रहित मर्यादा निभाने की प्रेरणा दी गई। इसके साथ ही नवाब कपूर सिंघ की ओर से सरदार जस्सा सिंघ को एक और विशेष सेवा सौंपी गई, जिसके परिणामस्वरूप इनके जीवन में एक क्रान्तिकारी मोड़ आया। वो सेवा थी— खालसा फौज के घोड़ों को दाना खिलाने अर्थात् खुराक उपलब्ध कराने की सेवा। इस सेवा को पूरी लगन और समर्पित भावना से सरदार जस्सा सिंघ निभाते रहे। इस सेवा के दौरान एक दिन सरदार जस्सा सिंघ रोते-रोते नवाब कपूर सिंघ के पास आए और कहा कि मैं आप जी द्वारा सौंपी गई सेवा को न्यायपूर्वक नहीं कर पा रहा हूं।

इस पर नवाब कपूर सिंघ ने सरदार जस्सा सिंघ के सिर पर प्यार से हाथ फेरते हुए आशीर्वाद स्वरूप वचन कहे— "तुमने घोड़ों को दाना खिलाना है। अगर घोड़ों की सेवा करते हुए पंथ मुझे 'नवाबी' प्रदान कर सकता है तो तुम्हें पातशाही दे सकता है।"

आने वाले समय में ये वचन सौ फीसदी सत्य साबित हुए।

निःसंदेह सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया बादशाह बने, अहमद शाह

अब्दाली के अधीन मुल्क को अपने अधीन किया, खालसा राज्य की स्थापना की, सिक्का चलाया, शाहों के शाहंशाह कहलाए।'शमशेर खालसा' कृत ज्ञानी गिआन सिंघ में पृष्ठ १९६-९७ पर दर्ज है :—

''जब अहमद शाह मराठों पर फतह पाकर लाहौर लौटा और लाहौर आकर वह तख्त पर बैठा तो सभी चौधरियों, सरदारों, अमीरों आदि को उपस्थित होने के लिए हुक्म किया। कसूर के मीर मुहम्मद को इसलिए कैद कर लिया कि उसने सिंघों को रुपया दिया था। उस समय वह बीस-बाईस हजार हिंदू पुरुष, औरत, बच्चे बुजुर्ग, लड़कियां, लड़के रोते-कुरलाते पकड़े हुए बैलगाड़ियों पर बांध कर लिए जा रहा था। सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया ने उसे अन्य सिक्ख सरदारों को साथ लेकर गोइंदवाल साहिब के पास ब्यास दरिया पार करते समय जा दबोचा और कैदियों के बंधन काट दिए। उनको उनके घर भेज दिया। यह सुख्याति, नेकनामी सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया के हिस्से आई। बादशाह लहू के घूंट भरता हुआ चला गया।''

'शमशेर खालसा' में बड़े घल्लूघारे के बारे में भी संकेत मिलता है कि ''सभी सरदार तेग खींच कर, घोड़े दौड़ा कर दुर्रानियों में जा घुसे और बड़ी भारी मार-काट की।''

''सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया और सरदार चढ़त सिंघ ने चार हजार शूरवीर लेकर तीन बार अहमद शाह के विरोद्धस्वरूप दुर्रानियों की सेना से टक्कर ली। दो बार शाह तक न पहुंच सके, परंतु तीसरी बार शाह के नजदीक जाकर सरदार जस्सा सिंघ ने गर्ज कर कहा, ''ए अहमद शाह! अगर तू मर्द है, तो जिस तरह लड़ना चाहे आ लड़ ले! मेरा-तेरा दोनों का जंग हो और लोग देखें!'' सिंघ ने बहुत ललकारा, मगर अब्दाली की हिम्मत न हुई और वह टल गया।'' (पृष्ठ २९८)

अहमद शाह अब्दाली का सिक्का चलना बंद हो गया और नकोदर सराय, श्री अमृतसर साहिब, लाहौर, सियालकोट, गुजरात आदि शहरों के साथ-साथ पंजाब के समस्त इलाकों में सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया द्वारा चलाया सिक्का प्रचलित हो गया।

विचारणीय तथ्य यह है कि यह वो समय था जब मुगल पठान फौज अजेय मानी जाने लगी थी। भारतवासियों के दिल में दहशत इस कद्र घर कर चुकी थी कि वे हमलावरों की अधीनता स्वीकार कर चुके थे। ऐसे भयावह समय व विषम परिस्थितियों में सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया, सरदार हरी सिंघ भंगी, सरदार चढ़त सिंघ शुकरचक्किया महान शूरवीर सरदारों ने विदेशी अत्याचारी आक्रमणकारियों के अत्याचारों के साथ-साथ अत्याचारियों का भ्रम तोड़कर कि उनका ही

शासन कायम रहेगा, खालसा पातशाही की स्थापना करने के साथ, अपने रक्त की अन्तिम बूंद भी इसकी बुनियाद में डाल कर इसे बुलंदी प्रदान की। ये वीर देश-भक्त, स्वतन्त्रता सेनानी की महान भूमिका अदा करते हुए देश के मुक्ति-प्रदाता बने। अहमद शाह अब्दाली के चंगुल से हिंदोस्तान की स्त्रियां व माल-असबाब उससे छीन कर स्त्रियों को सुरक्षित उनके घर पहुंचाने के कारण 'बंदी छोड़ योद्धा' की पदवी से विभूषित हुए। सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया 'बड़ा घल्लूघारा' में अत्यन्त शूरवीरता से लड़ते हुए २२ जख्म शरीर पर खाकर भी धर्मवीर योद्धा, पराक्रमी कहलाए।

नवाब कपूर सिंघ की सरदारी और बहादुरी के असली उत्तराधिकारी सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया ही थे। उनकी शूरवीरता का सिक्का जन्म ले चुका था और वही सरबत्त खालसा या दल खालसा के बेताज बादशाह स्वीकार हो चुके थे। नवाब कपूर सिंघ का १७५३ ई. में निधन हुआ। १७४८ ई. की वैसाखी को श्री अमृतसर साहिब में जब 'सरबत्त खालसा' का भारी जलसा हुआ तो सरदार जस्सा सिंघ उससे पहले मध्य पंजाब के मुख्य नेता और अजेय विजेता स्थापित हो चुके थे।

''अदीना बेग खान को हुशियारपुर में भारी पराजय देकर उसके इलाके के शासक बनकर वे वैसाखी के अवसर पर श्री अमृतसर साहिब 'सरबत्त खालसा' की बैठक में पहुंच गये। उसी जोड़ मेले पर 'सरबत्त खालसा' ने 'गुरमता' पास करके दल खालसा को ग्यारह मिसलों में बांटा था। सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया जहां आहलूवालिया मिसल के सरदार थे, वहीं उन्हें सभी मिसलों का प्रमुख सरदार और सुप्रीम कमांडर भी स्थापित किया गया। नवाब कपूर सिंघ को खालसा 'नवाब' नाम से संबोधित करते थे, सरदार जस्सा सिंघ को 'पातशाह' नाम से संबोधित किया जाने लगा।'' (प्रमुख सिक्ख शखसीअतां (संपादक डॉ. रूप सिंघ), डॉ. जीत सिंघ सीतल के लेख पृष्ठ १३८-३९ से उद्धृत)

अप्रतिम योद्धा, अतुलनीय जरनैल, निष्ठावान, सिक्ख संगत के विनम्र सेवक, खालसा पंथ के संत-सिपाही, निर्भीक, निडर, शूरवीर सेनापति, देश-धर्म से अटूट प्रेम करने वाले, तीक्ष्ण बुद्धि वाले दूरदर्शी, खालसा दलों के प्रमुख नेता, सुलतान-उल-कौम सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया गुरु के लाल ने जुल्म की अंधेरी काली रात्रि की कालिमा को समूल नष्ट करके, अपने शरीर पर अनेक घाव सहन कर, अपने पवित्र रक्त का कतरा-कतरा बहा कर खालसा पातशाही का सूर्य उदित कर सर्वत्र उजाला कर दिया।

सिक्खी सिद्धांतों के प्रकाश में साका श्री पंजा साहिब : एक अवलोकन

*-डॉ. सत्येन्द्र पाल सिंघ**

श्री गुरु ग्रंथ साहिब के पन्ना १६८ पर सुशोभित गउड़ी राग में श्री गुरु रामदास जी का वचन है, जिसका भाव है कि वाहिगुरु अपने सिक्ख से अति प्रेम करता है। वह माता की भांति स्वयं की सन्तान समझ कर सिक्ख का पालन-पोषण करता है और उस पर ममता की बरखा करता है। वाहिगुरु पल-पल अपने सिक्ख की चिंता करता है और उसकी सारी आवश्यकतायें पूर्ण करता है :

जिउ जननी सुतु जणि पालती राखै नदरि मझारि॥
अंतरि बाहरि मुखि दे गिरासु खिनु खिनु पोचारि॥
तिउ सतिगुरु गुरसिख राखता हरि प्रीति पिआरि॥

भाई गुरदास जी ने इस वचन के मर्म तक जाते हुए कहा कि वाहिगुरु का अपने सिक्ख के साथ सम्बन्ध इतना सुंदर है कि कोई अन्य सांसारिक सम्बन्ध उसके आगे नहीं ठहरता। वाहिगुरु इतना कृपालु है कि माता-पिता सहित सारे सम्बन्धों की प्रीति मिल कर भी उसके तुल्य नहीं है। वाहिगुरु की प्रीति की अनमोल दात गुरसिक्ख को तृप्त कर प्रीति का पुंज बना देती है। गुरसिक्ख के पास भी संसार को देने के लिए बस, प्रेम ही रह जाता है। गुरु की शरण में आये सिक्ख की जीवन-मर्यादा विलक्षण हो जाती है :

मिठा बोलणु निव चलणु
हथहु दे कै भला मनाए। (वार २८:१५)

देना और भला करना सिक्ख का स्वभाव बन जाता है। गुरसिक्ख का गुरसिक्खों से अटूट प्रेम होता है जो वाहिगुरु को प्रिय लगता है। गुरसिक्ख के लिए हर गुरसिक्ख गुरु का रूप होता है। अपनी व्यापक दृष्टि से वह गुरसिक्ख ही नहीं प्रत्येक मनुष्य में गुरु का मुख देखता है और भाई घन्हईआ जी की भांति हर अभावग्रस्त के अभाव, दुख, दर्द को अपना बना लेता है। उसके अंतर की यह निर्मल भावना वाहिगुरु की प्रेरणा व कृपा से ही आकार लेती है। सिक्खी का महत्वपूर्ण सैद्धांतिक स्तम्भ इसी भावना पर टिका हुआ है। सिक्खों ने इस भावना के अंतर्गत ही बलिदानों का बेमिसाल इतिहास सृजित किया, जो मानवता के लिए प्रेरणा का अक्षय आदर्श बन गया है। श्री पंजा साहिब का साका इसी इतिहास की अनमोल कड़ी है।

पाकिस्तान के नगर हसन अब्दाल में धर्म

*ई-१७१६, राजाजी पुरम, लखनऊ-२२६०१७, फोन : ९४१५९-६०५३३, ८४९७८-५२८९९

प्रचार-यात्राओं के दौरान श्री गुरु नानक साहिब का आगमन इस स्थान पर हुआ था। इस नगर के निवासी सूफी पीर वली कंधारी, जो हजरत वली कंधारी का गद्दीनशीन था, को श्री गुरु नानक साहिब की प्रतिष्ठा सहन न हुई और वह व्यग्र हो उठा। उसने जल मांगने गये भाई मरदाना जी को अपशब्द कहे व जल देने से इन्कार कर दिया। सरदार शमशेर सिंघ अशोक ने अपनी पुस्तक 'गुरुद्वारा पंजा साहिब दा इतिहास' में लिखा है कि जब श्री गुरु नानक साहिब को सारी बात पता चली तो उन्होंने उस पहाड़ी नगर की एक चट्टान (पथर) को ऊपर उठाने के लिए कहा। चट्टान ऊपर उठाते ही पानी के पांच झरने बह निकले। भाई मरदाना जी ने इनके मीठे पानी से अपनी प्यास बुझाई। उधर ऊपर पहाड़ी पर रहने वाले वली कंधारी का पानी का चश्मा सूखने लगा। यह (चमत्कार) देख वली कंधारी क्रोध से भर उठा और नीचे जहां श्री गुरु नानक साहिब व भाई मरदाना जी बैठे थे, वहां एक बड़ा पत्थर फेंका। गुरु साहिब ने अपने दायें हाथ से उस पत्थर को रोक लिया। यह घटना गुरु और गुरसिक्खी की महानता का दर्शन कराती है।

गुरु का संकल्प लोकहित का है। वह महान दाता है। सभी के अभाव दूर करने वाला है। वह तपते हुए मन को शीतल करने वाला है, तृप्त करने वाला है। गुरु साहिब के इस कौतुक से वली कंधारी का सारा अहंकार चूर-चूर हो गया और वह ग्लानि से भर गया। अपने मुरीदों के साथ वह पहाड़ी से नीचे उतर कर आया और श्री गुरु नानक साहिब के साथ आध्यात्मिक चर्चा कर ज्ञान प्राप्त किया। गुरु साहिब ने प्रेम सहित उसे सत्य का मार्ग दिखाया व उसकी समस्त शंकायें दूर कीं। जिसे अपने पानी के चश्मे का घमंड था वह तो स्वयं प्यासा था। गुरु साहिब ने उसे संतृप्त किया :

सूके हरे कीए खिन माहे ॥
अंम्रित द्रिसटि संचि जीवाए ॥ १ ॥
काटे कसट पूरे गुरदेव ॥
सेवक कउ दीनी अपुनी सेव ॥ (पन्ना १९१)

अहंकार ने वली कंधारी को दृष्टि-दोष से ग्रस्त कर दिया था। श्री गुरु नानक साहिब ने उसके अहंकार व क्रोध को प्रेम से शांत कर उसकी आंखें खोली थीं। विकार कभी टिकते नहीं। उनकी आयु बहुत अल्प होती है। वली कंधारी के पूर्व जन्म के कोई कर्म थे जो श्री गुरु नानक साहिब स्वयं वहां गये और उसका उद्धार किया। श्री गुरु नानक साहिब का उठा पंजा अपने लिए नहीं, वली कंधारी को नया जीवन देने हेतु था। इस घटना के पश्चात श्री गुरु नानक साहिब एक सप्ताह वहां रहे और स्थानीय लोगों को धर्म व सच के साथ जोड़ा।

सरदार शमशेर सिंघ अशोक के अनुसार, बड़ी संख्या में लोग गुरु साहिब के अनुयाई बन गये। जिस पत्थर की चट्टान को गुरु साहिब ने नीचे गिरने से रोका था, उस पर उनके पंजे के निशान बन गये। बहुत बाद में जब अहमद शाह अब्दाली को इस स्थान का पता चला तो उसके सिपाहियों ने उस पंजे के निशान को मिटाने के बड़े प्रयास किये, किन्तु सफल नहीं हुए। यह वाहिगुरु के आदर्शों की छाप थी, जिसे मिटाना किसी मनुष्य के वश का नहीं था। सच को पराजित नहीं किया जा सकता।

मेरा मनु राता गुण रवै मनि भावै सोई ॥
गुर की पउड़ी साच की साचा सुखु होई ॥
सुखि सहजि आवै साच भावै
साच की मति किउ टलै ॥
इसनानु दानु सुगिआनु मजनु
आपि अछलिओ किउ छलै ॥ (पन्ना ७६६)

अहंकार का सामना सहज से, क्रोध का सामना प्रेम से करना गुरु व गुरु के सिक्ख का चरित्र है। इतिहास इसका साक्षी है। सहज व प्रेम-भावना से सिक्ख को सच्चा सुख प्राप्त होता है। उसके अंदर की सारी तृष्णायें मिट जाती हैं। यह गुण उसके जीवन की पद्धति बन जाते हैं और विषम से विषम परिस्थिति में भी वह अडोल रहता है।

पंजाब में जब सिक्ख मिसलों की प्रभु-सत्ता स्थापित हुई तो श्री पंजा साहिब की धार्मिक व ऐतिहासिक महत्ता को देखते हुए सिक्ख नायक सरदार हरी सिंघ नलवा व सरदार हुकम सिंघ चिमनी ने यहां गुरुद्वारा स्थापित किया व पक्का सरोवर बनवाया। इसके बाद से इसे 'गुरुद्वारा श्री पंजा साहिब' नाम से जाना जाने लगा। पहले इस गुरुद्वारे का प्रबंध भिन्न-भिन्न लोगों के पास था। गुरुद्वारा प्रबंध सुधार लहर आरंभ होने पर २२ नवंबर, सन् १९२० को यहां का प्रबंध शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के पास आ गया। विशेषता यह रही कि अन्य गुरु-स्थानों के विपरीत गुरुद्वारा श्री पंजा साहिब का प्रबंध अपने हाथों में लेने में कोई ख़ास कठिनाई पेश नहीं आई थी। इतिहासकारों के अनुसार महाराजा रणजीत सिंघ भी अपने राज-काल में इस पावन स्थान के दर्शन करने आये थे।

यह वो समय था जब गुरुद्वारा प्रबंध सुधार लहर निरंतर तेज होती जा रही थी। एक के बाद एक मोर्चे लग रहे थे। सिक्ख अपनी शहीदियां देकर, जुल्म सह कर मोर्चे फतह करते जा रहे थे। इस क्रम में गुरुद्वारा गुरु का बाग़ का मोर्चा आरंभ हो गया। गुरु-घर के लंगर के लिए बाग़ से लकड़ियां काटने की सामान्य घटना ने, अंग्रेज प्रशासन की हठधर्मिता व बदनीयती ने एक बड़े आन्दोलन को जन्म दे दिया। सिक्ख जत्थों के रूप में लकड़ी काटने के लिए नित्य जाने लगे। उन्हें

बुरी तरह से पीटा जाता, गिरफ्तार कर कड़ी यातनायें दी जाती थीं, किन्तु सिक्ख पूरी तरह से शांत व अहिंसक रह कर लकड़ी काटने पर लगे प्रतिबन्ध को हटाने के लिये दृढ़ संकल्प थे। अंग्रेज सिक्खों को प्रतिदिन गिरफ्तार कर ले जाते व जेलों में कैद कर देते। सरदार सोहन सिंघ जोश ने अपनी पुस्तक 'अकाली मोरचिआं दा इतिहास' में लिखा है कि गिरफ्तार सिक्ख बंदी जिस ओर भी ले जाये जाते, रेलवे स्टेशनों पर उनका भारी स्वागत होता। रेलवे स्टेशनों पर ट्रेन पहुंचने के दो-दो, तीन-तीन घंटे पहले ही स्थानीय सिक्ख फूलों के हार, मिठाइयां, परांठे, सब्जियां, प्रसाद आदि लेकर पहुंच जाते थे। कई स्टेशनों पर कैदियों के इंचार्ज लोगों को कैदियों तक भोजन आदि पहुंचाने की अनुमति दे देते थे, किन्तु कई घमंडी अधिकारी पुलिस लगा देते थे और किसी को भी कैदियों के निकट नहीं फटकने देते थे। गुरुद्वारा गुरु का बाग के मोर्चे के बंदी सिक्खों को अधिकतर अटक व कैंबलपुर की जेलों में भेजा जा रहा था। पोठोहार के क्षेत्र में व्यापक जागृति थी। झेलम व रावलपिन्डी के अकाली सभी मोर्चों में बड़े उत्साह से भाग ले रहे थे। कैदियों का स्वागत करने में भी इन क्षेत्रों के लोग सबसे आगे थे।

एक दिन इस क्षेत्र के सिक्खों को सूचना मिली कि हसन अब्दाल (श्री पंजा साहिब) रेलवे स्टेशन से अकाली कैदियों की ट्रेन प्रातः आठ बजे गुजरने वाली है। सिक्खों ने निर्णय किया कि इस मौके भूखे-प्यासे कैदियों को लंगर छकाया जाये। वास्तव में इस भावना में भी बलिदानी तत्व था। जो सिक्ख मोर्चों में भाग ले रहे थे, वे अपनी जान हथेली पर रख कर सिक्ख होने का गौरव महसूस कर रहे थे। जो सिक्ख इन मोर्चों में शामिल नहीं हो पा रहे थे, उन्हें इस तरह की सेवा से अपने सिक्ख होने का गर्व अनुभव हो रहा था। यह सेवा भी मोर्चों की सफलता में बड़ा योगदान थी।

सिक्ख यह कैसे सहन कर सकते थे कि उनके होते हुए उनके सिक्ख भाई भूखे-प्यासे उनके क्षेत्र से होकर गुजर जायें! सरदार सोहन सिंघ जोश ने लिखा है कि सिक्खों ने भोर होने से पूर्व ही गुरुद्वारा श्री पंजा साहिब में ट्रेन से गुजरने वाले गुरु का बाग के मोर्चे के बंदी सिक्खों के लिये लंगर तैयार कर लिया। लंगर तैयार कर सिक्ख संगत आठ बजे से पहले ही रेलवे स्टेशन पर पहुंच गई। रेलवे स्टेशन पर ढाई सौ से अधिक सिक्ख एकत्र हो चुके थे। सिक्खों ने जब बंदियों की ट्रेन के बारे में स्टेशन मास्टर से पूछा तो पता चला कि ट्रेन हसन अब्दाल स्टेशन पर नहीं रुकेगी, सीधी चली जायेगी। सिक्खों ने निर्णय किया कि बंदी सिक्खों को लंगर तो हर हाल में छकाना है। किसी भी कीमत पर ट्रेन को रोका जायेगा।

सिक्ख रेल की पटरियों पर बैठ गये। कुछ युवक सिक्ख सिग्नल के एकदम निकट आकर बैठ गये। वहां बैठने वालों में मातायें व बहनें भी थीं। जब ट्रेन आई तो सिक्ख अविचल जहां बैठे थे, वहीं बैठे रहे। वे न घबराये, न हिले। ट्रेन सिक्खों को कुचलती हुई आगे जाकर रुक गई। सरदार शमशेर सिंघ अशोक के अनुसार, दो सिक्ख सरदार प्रताप सिंघ, खजांची गुरुद्वारा श्री पंजा साहिब व सरदार करम सिंघ, निवासी श्री अनंदपुर साहिब रेल की पटरियों पर गभीर जख्मी हुए और बाद में शहीद हो गये। ये दोनों युवक थे। लगभग छ: सिक्खों के अंग कट गये और वे बुरी तरह से घायल हो गये। ट्रेन रुकने के बाद सभी बंदी सिक्खों को लंगर छकाया गया और उनकी सेवा की गई। विशेष बात यह हुई कि शहीद व घायल होने वाले सिक्खों की इच्छानुसार पहले बंदी सिक्खों को लंगर छकाया गया, उसके बाद शहीद व घायल हुए सिक्खों को संभाला गया।

भाई गुरदास जी ने सिक्खों के चरित्र की तुलना पानी से की है। पानी गर्म हो जाता है, किन्तु उसे ठंडा होने में भी अधिक समय नहीं लगता। सिक्खों की जानें गईं, अंग कट गये, गंभीर रूप से ट्रेन के नीचे कुचले गये, किन्तु उनकी सहजता भंग नहीं हुई थी। शेष सिक्खों ने प्रेम व सेवाभाव से ट्रेन में सवार गुरुद्वारा गुरु का बाग के मोर्चे के बंदी सिक्ख भाइयों को लंगर छका कर आत्म-संतोष प्राप्त किया। यह बहुत बड़ी बात थी जो मात्र एक सिक्ख की ही विशेषता है। उनमें संतोष व सहज भी था और जूझने की भावना भी थी :

गगन दमामा बाजिओ परिओ नीसानै घाउ ॥
खेतु जु मांडिओ सूरमा अब जूझन को दाउ ॥
(पन्ना ११०५)

विषय परिस्थितियों का सामना करने की, जूझने की सच्ची भावना प्रकट हुई थी, तभी ट्रेन रुक गई, अन्यथा ट्रेन रोकी नहीं जा सकती थी तथा थके, भूखे सिक्ख कैदियों की पीड़ा और लंबी हो जाती। इससे उनका उत्साहवर्धन भी हुआ। रेल की पटरी पर कुचले गये सिक्ख जीवन और मृत्यु के बीच अधर में लटके हुए थे, किन्तु फिर भी उनका ध्यान इस अपने पूर्व निर्धारित कर्तव्य की ओर था। उन सिक्खों में सुख व दुख एक साथ चल रहे थे। उनका सहज सरोवर के उस हंस की तरह था जो कभी सरोवर त्याग कर नहीं जाता :

सरवर हंसा छोडि न जाइ ॥
प्रेम भगति करि सहजि समाइ ॥ (पन्ना ६८५)

श्री पंजा साहिब का साका सिक्ख-समर्पण की कठिन परीक्षा थी, जिसे सिक्ख संगत ने सहज ही पार कर एक इतिहास रचा।

साका श्री पंजा साहिब

*-डॉ. राजेंद्र सिंघ 'साहिल'**

साका श्री पंजा साहिब सिक्ख इतिहास की एक अत्यंत महत्वपूर्ण घटना है। यह घटना ३० अक्तूबर १९२२ ई. को घटित हुई थी। गुरुद्वारा प्रबंध सुधार लहर में इस घटना का एक विशेष स्थान है। गुरुद्वारा श्री पंजा साहिब पाकिस्तानी पंजाब के शहर हसन अब्दाल में सुशोभित है।

हसन अब्दाल : अतीत और वर्तमान : हसन अब्दाल जिला अटक में रावलपिंडी से लगभग ३५-४० किलोमीटर दूर उत्तर-पश्चिम में स्थित है। तक्षशिला विश्वविद्यालय के खंडहर यहां से मात्र डेढ़-दो किलोमीटर की दूरी पर हैं। हसन अब्दाल के आस-पास के पहाड़ बहुत सख्त और शुष्क हैं। यहां पानी की बेहद कमी है। पानी के लिए इस इलाके में थोड़े-बहुत चश्मे वगैरह हैं।

इस कसबे का नाम एक मुस्लिम (वली) पीर हसन अब्दाल के नाम पर पड़ा। हसन अब्दाल खुरासान के शहर सब्जबार का रहने वाला था। इसे यह स्थान इतना पसंद आया कि इसने यहीं रहने का निश्चय कर लिया। हसन अब्दाल का कंधार भी आना-जाना था, इसलिए इसे 'वली कंधारी' भी कहा जाता था।

हसन अब्दाल कसबा बहुत पुराना है। इस स्थान का जिक्र बौद्ध चीनी यात्री ह्वेनत्सांग की पुस्तक में भी मिलता है। यह चीनी यात्री सातवीं शताब्दी में यहां आया था। उस समय यहां नाग राजा इलायत का शासन था। उस समय यहां बौद्ध धर्म का प्रचार और प्रसार भी था। ह्वेनत्सांग ने लिखा है कि इस क्षेत्र में अनेक स्तूप एवं मंदिर मौजूद थे।

सिक्ख इतिहास में यह स्थान श्री पंजा साहिब नाम से विख्यात है। प्रथम पातशाह श्री गुरु नानक देव जी की चरण-रज से पवित्र हुई यह भूमि सिक्ख परंपरा में विशेष स्थान रखती है।

वली कंधारी का गर्व-दलन : प्रथम पातशाह श्री गुरु नानक देव जी अपनी तीसरी उदासी के दौरान मक्का और बगदाद से वापस लौटते हुए इस स्थान पर आये थे।

उस समय यहां एक ओर ऊंची पहाड़ी थी। मुस्लिम पीर वली कंधारी यानी हसन अब्दाल इसी पहाड़ी की चोटी पर रहता था। इस समय तक कुछ गैबी ताकत हासिल करके वली कंधारी बहुत घमंडी और क्रोधी हो गया था।

गुरु जी ने विश्राम के लिए भाई मरदाना जी के साथ इसी पहाड़ी के नीचे आसन जमाया। उस पूरे इलाके में आस-पास कहीं पानी नहीं था। मात्र एक चश्मा था, जो पहाड़ी की चोटी पर था। उस चश्मे पर वली कंधारी ने कब्जा कर रखा था। क्रोधी और घमंडी वली कंधारी किसी प्राणी को

**१/३३८, स्वप्नलोक, दशमेश नगर, मंडी मुल्लांपुर दाखा (लुधियाना), पंजाब-१४११०१, फोन : ९४१७२-७६२७१*

भी वहां से पानी नहीं लेने देता था। उस चश्मे से पानी लेने के लिए हर आदमी को पहले वली कंधारी से आज्ञा लेनी पड़ती थी।

भाई मरदाना जी को तेज प्यास लगी। वे पानी लेने के लिए उस पहाड़ी की चोटी पर पहुंचे। अहंकारी वली कंधारी ने उन्हें पानी लेने से रोक दिया। बार-बार विनती करने पर भी उस पर कोई असर नहीं हुआ। हार कर भाई मरदाना जी बिना पानी, प्यासे ही गुरु जी के पास लौट आए।

गुरु जी ने भाई मरदाना जी को प्यास से बेहाल देखा तो 'सति करतार' कहकर भाई मरदाना जी को पास पड़ी एक चट्टान को उठाने के लिए कहा। पत्थर उठाते ही वहां शीतल जल का एक झरना फूट पड़ा। भाई मरदाना जी अत्यंत प्रसन्न हुए और उन्होंने जी भर कर शीतल जल पिया।

उधर वली कंधारी का चश्मा सूखना शुरू हो गया। यह देखकर घमंडी वली कंधारी बहुत क्रोधित हो उठा और उसने गुस्से में आकर एक बहुत बड़ा पत्थर पहाड़ी की चोटी से श्री गुरु नानक देव जी की ओर लुढ़का दिया। गुरु जी ने उस गिरती हुई चट्टान को हाथ का पंजा लगाकर रोक दिया। यह कौतुक देखकर वली कंधारी का घमंड चूर-चूर हो गया। वह दौड़कर गुरु जी के चरणों में आ गिरा और अपनी धृष्टता की क्षमा मांगी।

गुरु जी के पवित्र पंजे के निशान वाला यह पत्थर आज भी वहां मौजूद है। बाद में उस चश्मे और पत्थर के निकट गुरुद्वारा साहिब निर्मित किया गया, जो आज पवित्र 'गुरुद्वारा श्री पंजा साहिब' कहलाता है।

गुरुद्वारा प्रबंध सुधार लहर एवं गुरुद्वारा श्री पंजा साहिब : गुरुद्वारा श्री पंजा साहिब के लिए महाराजा रणजीत सिंघ ने एक जागीर नाम लगा दी थी। अन्य गुरुद्वारा साहिबान की भांति यहां का प्रबंध भी महंतों के हाथ में था। महंत मिट्ठा सिंह, जो इस गुरुधाम पर काबिज़ था, ने धीरे-धीरे गुरु-घर की सारी जायदाद अपने नाम करा ली थी। १९२० ई. में महंत की मृत्यु हो गई।

इन्हीं दिनों भाई करतार सिंघ झब्बर और भाई अमर सिंघ रईस झबाल के नेतृत्व में सिक्खों का एक जत्था गुरुधाम को मुक्त कराने जा पहुंचा। नये महंत संत सिंह के विरोध के बावजूद १८ नवंबर, १९२० ई. को इस पवित्र गुरुधाम को महंत के पंजे से मुक्त करा लिया गया।

साका श्री पंजा साहिब : ३० अक्तूबर, १९२२ ई. को यहां एक और ऐसी घटना घटी, जिसने श्री पंजा साहिब को दूसरी बार ऐतिहासिक महत्त्व प्रदान कर दिया। यह घटना 'साका श्री पंजा साहिब' कहलाती है।

बीसवीं शताब्दी के प्रारंभिक वर्ष गुरुद्वारा प्रबंध सुधार लहर के वर्ष थे। समस्त गुरुद्वारा साहिबान लंबे समय से महंतों के कब्ज़े में थे। गुरुद्वारों की सम्पत्ति एवं चढ़ावे पर पल रहे ये महंत बेहद स्वार्थी और भ्रष्टाचारी हो गए थे।

सिक्ख संगत चाहती थी कि सारे गुरुद्वारा साहिबान का प्रबंध सिक्खों द्वारा चुनी गई प्रबंधक कमेटी चलाए और गुरुधामों से प्राप्त आर्थिक एवं संगठनात्मक शक्ति का प्रयोग

सिक्ख समाज के समुचित विकास के लिए किया जा सके।

अंग्रेज सरकार की ओर से गुरुद्वारा एक्ट पारित हो जाने के बावजूद अनेक महंत गुरुद्वारा साहिबान को सिक्ख जनता को सौंपने को तैयार न थे। ऐसे में सिक्ख समाज मोर्चे लगा-लगाकर गुरुधामों को मुक्त करवा रहा था।

इसी आंदोलन के अन्तर्गत जिला श्री अमृतसर में गुरुद्वारा गुरु का बाग में मोर्चा आरंभ हुआ। यह पवित्र स्थान पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी और नवम् पातशाह श्री गुरु तेग बहादर साहिब से संबंधित है। इस मोर्चे में ५५०० सिक्ख गिरफ्तार करके जेल भेज दिए गए।

इन सिक्खों में से एक जत्थे को ढाई वर्ष की सजा सुनाई गई और अटक जेल भेजने का हुक्म हुआ। इस जत्थे को लेकर जा रही रेलगाड़ी ३० अक्तूबर, १९२२ ई. को श्री पंजा साहिब रेलवे स्टेशन से होकर गुजरने वाली थी।

श्री पंजा साहिब की संगत को जब यह सूचना मिली कि भूखे-प्यासे सिंघों को कैदी बनाकर रेलगाड़ी के माध्यम से ले जाया जा रहा है तो संगत ने जत्थे को लंगर छकाना चाहा।

श्री पंजा साहिब की संगत को यह बर्दाश्त नहीं था कि इस पावन धरती, जहां पर प्रथम पातशाह ने प्यासे भाई मरदाना जी की प्यास बुझाई थी, से भूखे-प्यासे सिक्ख जत्थे को लेकर रेलगाड़ी आगे निकल जाये।

संगत दूध, फल, पानी, लंगर आदि लेकर स्टेशन पर पहुंच गई। स्टेशन मास्टर से प्रार्थना की गई कि वह कुछ समय तक रेलगाड़ी को रोक दे, ताकि जत्थे को लंगर छकाया जा सके, परंतु यह प्रार्थना स्वीकार नहीं की गई।

श्री पंजा साहिब की संगत अरदास करके भाई करम सिंघ और भाई प्रताप सिंघ के नेतृत्व में रेल की पटरी पर मोर्चा लगाकर बैठ गई। दोनों सिक्ख रेलगाड़ी के नीचे कट कर शहीद हो गए और कई घायल हो गए। अंततः रेलगाड़ी रुक गई और दो घंटे तक रुकी रही। जत्थे को प्रेम से लंगर छकाकर ही आगे जाने दिया गया। सिक्ख इतिहास में यह घटना 'साका श्री पंजा साहिब' नाम से प्रसिद्ध है।

वर्तमान गुरुद्वारा श्री पंजा साहिब : बाद में १९३०-३२ ई. में इस पवित्र स्थान पर एक सुंदर गुरुधाम एवं सराय का निर्माण करा दिया गया था। यहां प्रतिवर्ष वैसाखी का जोड़ मेला लगता था। चैत्र की चतुर्दशी और भादों की अमावस्या भी बड़े पैमाने पर मनाई जाती थी। यहां २२ आषाढ़ से पहली सावन तक जोड़ मेला भी लगता रहा था।

देश-विभाजन के बाद यह पवित्र गुरुधाम पाकिस्तान में रह गया। अब भी सिक्ख यात्री जत्थे के रूप में वहां जाते हैं। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर की ओर से गुरुपर्व आदि पर भेजे जाते जत्थों में शामिल संगत गुरुद्वारा श्री पंजा साहिब के दर्शन कर आनंदविभोर हो जाती है।

सर गंगा राम और गुरुद्वारा गुरु का बाग का मोर्चा

-डॉ. परमवीर सिंघ*

सर गंगा राम गुरु-घर के श्रद्धालु और परोपकारी वृत्ति के मालिक थे। १८५१ ई. में इनका जन्म मौजूदा पाकिस्तान के श्री ननकाणा साहिब जिले के अधीन गाँव मंगतांवाला में हुआ, जो कि अब एक नगर का रूप धारण कर गया है। मुगलों के समय यह गाँव दिल्ली जाते शाह मार्ग पर स्थित था, जिस कारण यहाँ मिट्टी की एक पुरानी गढ़ी बनी हुई थी, जिसे अंग्रेज़ सरकार ने पुलिस स्टेशन में तबदील कर दिया था। यहाँ पर इनके पिता श्री दौलत राम जूनियर सब-इंस्पेक्टर के रूप में स्थानांतरित होकर आए थे। चाहे पुलिस स्टेशन में ही इनके रहने का प्रबंध था, लेकिन श्री दौलत राम ने नज़दीक ही एक गुरुद्वारा साहिब में रिहायश का प्रबंध कर लिया था, जिसकी सेवा-संभाल एक सिक्ख साधु भाई बिशन सिंघ किया करते थे। दौलत राम और इनकी पत्नी गुरु-घर की सेवा करने लगे थे। यहाँ निवास के दौरान वैसाखी वाले दिन सर गंगा राम का जन्म हुआ था। श्री दौलत राम की ईमानदारी और नौकरी के प्रति निष्ठा ने क्षेत्र के अपराधियों को बेचैनी पैदा कर दी। जब डाकुयों ने इन्हें रिश्वत लेने या मार देने की धमकी दी, तो इन्होंने ईमानदार रहते हुए गरीबी में ही जीवन बसर करने का फ़ैसला कर लिया। नौकरी छोड़ कर ये श्री अमृतसर आ बसे, जहाँ सर गंगा राम का प्रारंभिक जीवन-यापन हुआ था। अदालत में कापी-लेखन का कार्य करने के साथ-साथ श्री दौलत राम रोज़ाना श्री हरिमंदर साहिब के दर्शन और सेवा करने के लिए भी जाते थे।

सर गंगा राम ने प्रारंभिक शिक्षा श्री अमृतसर में ही संपूर्ण की और फिर गवर्नमेंट कॉलेज, लाहौर में दाख़िला ले लिया था। १८७१ ई. में इंजीनियरिंग की पढ़ाई करने के लिए ये थॉमसन इंजीनियरिंग कॉलेज, रुड़की चले गए थे। १८७३ ई. में आर्किटेक्ट विषय में डिग्री पास कर ये दिल्ली में नौकरी करने लगे, जहाँ लार्ड रिपन इनके काम से बहुत प्रभावित हुआ और उसने आगामी प्रशिक्षण के लिए इन्हें इंग्लैंड भेजने के लिए नामज़द कर दिया था। ब्रेडफोर्ड में दो वर्ष प्रशिक्षण करने के पश्चात् ये वापस भारत लौट आए तो इन्हें लाहौर भेज दिया गया, जहाँ इन्होंने ऐचीसन चीफ्स कॉलेज, लाहौर का नक्शा एवं इमारत के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान दिया। इन्होंने लगभग २७ वर्ष सरकार की नौकरी की और कई महत्वपूर्ण इमारतें एवं सड़कें बनाने का कार्य किया था। १९०३ ई. में सेवानिवृत्त होने पर इनकी सेवाओं को मुख्य रखते हुए सरकार ने इन्हें चिनाब कालोनी में २० मुरब्बे ज़मीन अलाट कर दी थी।

सेवानिवृत्ति के बाद इन्हें पटियाला रियासत की सेवा में ले लिया गया, जहाँ इन्होंने शानदार मोती बाग़ पैलेस सहित अनेक इमारतों के निर्माण में

*सिक्ख विश्वकोष विभाग, पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला—१४७००२, फोन : ९८७२०-७४३२२

महत्वपूर्ण योगदान दिया था। सरकारी नौकरी, पदवियाँ और सम्मान प्राप्त करने वाले सर गंगा राम बहुत ही परोपकारी शख्सियत के मालिक थे और देश में इन्होंने एक दानी के रूप में अपनी पहचान स्थापित कर ली थी। विधवा स्त्रियों के साथ इनकी विशेष सहानुभूति थी। उन दिनों बहुत छोटी उम्र में ही लड़कियों के विवाह हो जाया करते थे और उनमें से कई दुर्भाग्यवश बाल विधवा हो जाया करती थीं। इन्होंने गरीब परिवारों की ऐसी लड़कियों के लिए दान देने में कोई कसर बाकी नहीं छोड़ी थी। इनके साथी बताते हैं कि इनका पर्स विधवा स्त्रियों के लिए हमेशा खुला रहता था और ये अक्सर कहा करते थे कि इन्हें दी जाने वाली सहायता हमेशा ही कम है।

सर गंगा राम की गुरु-घर के प्रति भी अथाह श्रद्धा थी और ये जहाँ भी नौकरी करते, श्री दरबार साहिब श्री अमृतसर में माथा टेकने के लिए अवश्य आते थे। बचपन में ये अपने पिता के साथ श्री दरबार साहिब जाया करते थे। फिर जब नौकरी करने के लिए दिल्ली, लाहौर या किसी अन्य नगर में रहे तो अपने माता-पिता से मिलने के लिए श्री अमृतसर आते थे। यहाँ पहुँचते ही इनकी पहली इच्छा श्री दरबार साहिब में माथा टेकने की होती थी। इसी दौरान जब गुरुद्वारा गुरु का बाग़ का मोर्चा आरंभ हुआ तो ये अकालियों पर हो रहे सरकारी अत्याचार को देख कर अति दुखी हुआ करते थे। ये चाहते थे कि कोई ऐसा रास्ता ढूँढा जाये जिससे सरकार और अकालियों के मध्य चल रहा टकराव ख़त्म हो सके। इस सम्बन्ध में इन्होंने शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान स. महिताब सिंघ के साथ जेल में मुलाकात की और उन्हें कोई ऐसा मार्ग निकालने की विनती की जिससे अकालियों का सरकार के साथ टकराव ख़त्म हो सके।

जब कोई बात सिरे न चढ़ी तो इन्होंने पंजाब के गवर्नर सर एडवर्ड मैकलगन को मिल कर यह सुझाव दिया कि महंत की ज़मीन उसे ठेके पर दे दी जाये, ताकि अकाली उसमें से लंगर के लिए लकड़ियां काट सकें। इससे सरकार और अकालियों के बीच पैदा हुआ टकराव ख़त्म हो सकता है। सर गंगा राम के इस सुझाव की पुष्टि सर जॉन मेनार्ड द्वारा पंजाब लेजिस्लेटिव कौंसिल में दिए इस बयान से हो जाती है :—

The initiative for the arrangement had come from Sir Ganga Ram himself and the Government encouraged it. (G.A. Sundram, Guru Ka Bagh Satyagraha (1923), p.xii)

यह एक ऐसा सुझाव था, जिसने सरकार को सांत्वना प्रदान करने के साथ-साथ सरकार को इस मसले में से बाहर निकलने का आसान मार्ग प्रदान कर दिया था। मीडिया के माध्यम से आम लोगों तक पहुँच रही खबरों ने सरकार के लिए बहुत बड़ा संकट पैदा कर दिया था। इस टकराव को ख़त्म करने के लिए सरकार रास्ता ढूँढ रही थी और जब सर गंगा राम का सुझाव सामने आया तो सरकार ने उसे तुरंत स्वीकार कर लिया था।

१० जुलाई, १९२७ ई. की सुबह सर गंगा राम लंदन में अकाल प्रस्थान कर गए थे। गुरुद्वारा गुरु का बाग़ के मोर्चे के दौरान इनके द्वारा किये गए यत्न निश्चित रूप से सराहनीय हैं, जिनमें इनका कोई निजी स्वार्थ शामिल नहीं था और ये गुरु-घर की सेवा से प्राप्त हुई बख्शिश के रूप में सम्पूर्ण हुए थे।

संक्षिप्त जीवन-वृत्तांत शहीद भाई करम सिंघ साका श्री पंजा साहिब वाले

-डॉ. हरप्रीत कौर*

सिक्ख इतिहास युद्धों, घल्लूघारों, साकों, मोर्चों आदि में जूझने वाले अनगिनत शहीदों की दास्तान की गवाही भरता है। शहीदों के लासानी कर्म ने दुनिया के इतिहास में सिक्ख तवारीख को विलक्षण स्थान प्रदान किया है। जब पंथ की ख़ातिर शहीद होने का समय आता है तो सिक्ख के मन में जोश आ जाता है। शहादत भरे सिक्ख इतिहास में साका श्री पंजा साहिब की विलक्षण दास्तान है। इस साके ने बताया कि जहाँ वली कंधारी के अहं को श्री गुरु नानक देव जी ने चूर-चूर कर दिया वहीं अपने हाथ के पंजे से उस पत्थर को भी पवित्रता प्रदान कर अमर कर दिया जो वली कंधारी ने अहं में गुरु पातशाह की तरफ फेंका था। इसी प्रकार अंग्रेज़ हुकूमत की अहंकारी वृत्ति को रूपमान करती तेज रफ्तार में जा रही रेलगाड़ी को श्री गुरु नानक देव जी के सिक्खों ने अपना तन अर्पित करते हुए रोक कर सिक्ख पंथ की शक्ति के दर्शन करवा दिए। साका श्री पंजा साहिब के दौरान जहाँ कई सिक्ख ज़ख़्मी हुए वहीं भाई करम सिंघ और भाई प्रताप सिंघ शहादत प्राप्त कर गए। इस लेख में शहीद भाई करम सिंघ के जीवन पर चर्चा करने का यत्न किया गया है।

ज़्यादातर विद्वानों ने भाई करम सिंघ का जन्म गुरसिक्ख परिवार में भाई भगवान सिंघ तथा माता रूप कौर के घर १४ नवंबर, १८८५ ई. को होना बताया है।[1] भाई भगवान सिंघ महाकवि भाई संतोख सिंघ की पुत्र-वधू के पिता थे। वे तख़्त श्री केसगढ़ साहिब, श्री अनंदपुर साहिब के महंत थे और पूर्ण तया गुरसिक्खी जीवन वाले थे। घर आए गुरसिक्खों की सेवा करनी, परशादा छकाना, गर्मियों के समय मार्ग में खड़े होकर राहगीरों को गड़वे (लोटा) से जल छकाना, उनका नित्य का कर्म था। इसीलिए उन्हें 'गड़वे वाले महंत' भी कहा जाता था। महाराजा करम सिंघ पटियाला ने रियासत की तरफ से श्री अनंदपुर साहिब में बने बुंगे का प्रबंध भाई भगवान सिंघ को दे दिया था। इलाके की संगत से भाई भगवान सिंघ की महिमा सुन कर महाराजा करम सिंघ द्वारा उन्हें पटियाला में दर्शन देने के लिए बुलाया गया और उनकी सवारी के लिए हाथी भी भेजा गया। भाई भगवान सिंघ के प्रति बाकी महंतों के नीरस व्यवहार को देख कर महाराजा पटियाला ने उन्हें ऐसी कुसंगत में से निकल कर पटियाला में निवास करने की विनती की। भाई करम सिंघ के पिता ने विनती स्वीकार

*रिसर्च स्कालर, सिक्ख इतिहास रिसर्च बोर्ड, शिरोमणि गु. प्र. कमेटी, श्री अमृतसर, फोन : ९६४६७८५९९८.

करते हुए पटियाला में निवास करना मान लिया और श्री अनंदपुर साहिब वाला मकान एक गरीब सिक्ख को अरदास (भेंट) कर दिया। कुछ समय पश्चात् वह मकान गिरने के कारण उसमें से बहुत सारा धन निकला। भाई भगवान सिंघ को धन ले जाने के लिए संदेश भेजा गया, लेकिन भाई साहिब ने कहा कि ''अगर वह मेरा धन होता तो मेरे मकान स्वामित्व के समय निकलता, परन्तु अब मैं मकान का मालिक नहीं। जिसके स्वामित्व के समय धन निकला, उस धन का मालिक भी वही है। इसमें से मैं एक पाई भी नहीं लूँगा।'' ऐसी करनी वाले महान गुरसिक्ख भाई भगवान सिंघ भाई करम सिंघ के पिता थे। इस प्रकार निष्काम सेवा, संतोष और अडिगता जैसे गुणों से भरपूर गुरसिक्खी जीवन की दात भाई करम सिंघ को विरासत में प्राप्त हुई थी।

भाई करम सिंघ के अन्य तीन भ्राता— भाई अतर सिंघ, भाई गुरदित्त सिंघ और भाई हीरा सिंघ थे, जो उनसे बड़े थे। भाई करम सिंघ का पहला नाम 'संत सिंघ' था। वे श्री गुरु अरजन देव जी की बाणी में से ''*संता के कारजि आपि खलोइआ हरि कंमु करावणि आइआ राम॥*'' वाला शबद सप्रेम पढ़ा करते थे। साथियों के साथ खेलते समय भी भाई करम सिंघ ईश्वरीय प्रेम में लीन होकर शबद-गायन करते थे। उनको राग-विद्या का बहुत शौक था। कीर्तन का प्रशिक्षण उन्होंने अपने पिता जी से प्राप्त किया था। वे आसा की वार का अति रसमयी कीर्तन किया करते थे और कथा करने में भी प्रवीण थे। गुरबाणी के प्रति लगन, कीर्तन के लिए प्रेम और पंथ के लिए सेवा की भावना बढ़ने से भाई साहिब का जीवन अत्यधिक ऊँचा हो गया।

आप जी का अनंद कारज बीबी किशन कौर के साथ हुआ था। भाई करम सिंघ के पिता जी का पटियाला में अकाल प्रस्थान के बाद उन्हें तख़्त श्री केसगढ़ साहिब का महंत नियुक्त किया गया। वे पूर्ण गुरु-मर्यादा के साथ इस सेवा को निभाते थे और जात-पांत एवं ऊंच-नीच के भेदभाव से गुरुद्वारा साहिब के प्रबंध को मुक्त रखते थे, जिस कारण जात-पांत को मानने वाले पुजारी भाई साहिब के साथ ईर्ष्या करते थे।

गुरु-स्थानों की यात्रा करने की इच्छा के उद्देश्य से वे श्री हजूर साहिब गए। श्री हजूर साहिब की यात्रा के दौरान ही उन्होंने अमृत छका और उनका नाम 'करम सिंघ' रखा गया।[२] जब वे श्री अनंदपुर साहिब वापिस लौटे तो उस समय गुरुद्वारा प्रबंध सुधार लहर पूरे ज़ोरों पर थी। इन दिनों गुरुद्वारा गुरु का बाग का मोर्चा भी लगा हुआ था। भाई करम सिंघ की दिली इच्छा पंथ की सेवा करने की थी। इस कारण उन्होंने महंती और जद्दी विरासत के ख़्याल को छोड़ कर तख़्त श्री केसगढ़ साहिब का प्रबंध पंथ के हवाले कर दिया और खुद श्री अमृतसर साहिब आ गए। गुरुद्वारा प्रबंध सुधार लहर का उद्देश्य गुरु-मर्यादा के विपरीत गतिविधियां करने वाले महंतों के हाथों से गुरुद्वारा साहिबान को आज़ाद

करवाना था। दूसरी तरफ भाई भगवान सिंघ और भाई करम सिंघ (महंत) भी थे, जिनका जीवन गुरसिक्खी गुणों से ओत-प्रोत था। उन्हें किसी जायदाद का लालच नहीं था। वे अपना जीवन पंथक-सेवा में लगा कर गुरु के लेखे लगाना चाहते थे।

गुरुद्वारा गुरु का बाग़ के मोर्चे में भाई करम सिंघ ने पंथक-भावना के साथ सेवा की। इस दौरान उनकी धर्म-पत्नी बीबी किशन कौर ने भी गुरु के लंगर और ज़ख्मियों की सेवा करके पंथक-सेवा में अपना योगदान दिया। इसके बाद वे गुरुद्वारा श्री पंजा साहिब के दर्शन करने के लिए रवाना हो गए। यहाँ भी वे कथा और कीर्तन के द्वारा संगत को निहाल करते थे। उनके द्वारा किया गुरमति व्याख्यान श्रोताओं पर गहरा प्रभाव डालता था।[३] उनकी पत्नी भी गुरु के लंगर में सेवा करती थी। संगत में भाई करम सिंघ की शख्सियत का बहुत प्रभाव था। उनका भरा हुआ चेहरा, सुंदर काली दाढ़ी, मीठा स्वभाव प्रत्येक के आकर्षण का कारण बनता था। कुछ ही समय के दौरान संगत के दिल में आप जी के लिए अति प्यार और सत्कार की भावना पैदा हो चुकी थी।

३० अक्तूबर १९२२ ई. को श्री पंजा साहिब का साका घटित हुआ। इस दिन अपने नियमानुसार अमृत वेले 'आसा की वार' का कीर्तन करते हुए भाई करम सिंघ ने प्रेम में *''पखा फेरी पानी ढोवा''*और *''मरउ त हरि कै दुआर''* शबदों का गायन किया। एक सिक्ख ने दीवान में गुरुद्वारा गुरु का बाग के मोर्चे के सम्बन्ध में गिरफ़्तार हुए अकाली कैदियों की स्पेशल रेलगाड़ी आने की सूचना दी, जो कि अटक जेल को जाते हुए हसन अब्दाल स्टेशन से गुज़र कर जानी थी। इस ख़बर ने संगत में दृढ़ संकल्पी योद्धाओं के दर्शन और सेवा करने की इच्छा पैदा कर दी।[४] ज्ञानी ख़जान सिंघ के अनुसार ''बाणी के रसिया भाई करम सिंघ ने कहा, खालसा जी! हम तो वार का भोग पा (डाल) के आएंगे, मगर देख लेना, हम चले चाहे सबसे बाद में, लेकिन पहुँचेंगे सबसे पहले।'' भाई करम सिंघ 'आसा की वार' की समाप्ति कर अरदास करने के पश्चात् शबद पढ़ते हुए प्लेटफार्म पर पहुँचे।[५]

इलाके की संगत ने सिक्खों के स्वागत के लिए गुरु के लंगर का प्रबंध करने से सम्बन्धित गुरमता पास किया। संगत रसद— दूध, फल, पानी और अन्य वस्तुओं आदि का जो भी प्रबंध हुआ, लेकर हसन अब्दाल स्टेशन पर पहुँच गई। स्टेशन मास्टर से जानकारी मिली कि रेलगाड़ी यहाँ नहीं रुकेगी, सीधी (आगे) गुज़र जायेगी। संगत रेलगाड़ी में आ रहे गिरफ़्तार सिंघों की सेवा करने के लिए उत्साहित थी। संगत के उत्साह को देखते हुए स्टेशन मास्टर ने कहा कि ''अगर मैं गाड़ी रोक सकता होता तो अवश्य रोकता, लेकिन मुझे भी ऊपर से हुक्म है कि यहाँ गाड़ी खड़ी न की जाये। यह सुन कर सिक्खों ने विचार करनी शुरू कर दी। भाई करम सिंघ और

भाई प्रताप सिंघ ने संगत से कहा, ''गाड़ी अवश्य रुकेगी! हम लोग अपने वीरों को प्रसाद और दूध छकाएंगे!''[६] भाई करम सिंघ ने जोश में आकर स्टेशन मास्टर से कहा, ''अगर तुम्हें तुम्हारे मालिकों का हुक्म है कि यहाँ गाड़ी न रोकी जाए, तो हमें भी हमारे मालिक वाहिगुरु का हुक्म है कि गाड़ी अवश्य रोकी जाए।''[७]

गुरु की कृपा से सिंघ सब कुछ कर सकता है। सिंघों ने अपने पराक्रमी इतिहास को याद किया और अपनी चेतना को गुरुद्वारा श्री पंजा साहिब के इतिहास के साथ जोड़ा। सिंघों ने याद किया कि इस स्थान पर श्री गुरु नानक देव जी ने वली कंधारी द्वारा फेंके गए पत्थर को रोक कर उसका अहंकार तोड़ा था। सिक्ख भी उसी पातशाह के सेवक हैं। गुरु की कृपा से तो भाई बचित्तर सिंघ शूरवीर ने मस्त हाथी का मुकाबला कर लिया था। यदि गुरु की कृपा हो तो सिक्ख रेलगाड़ी भी रोक सकते हैं। भाई करम सिंघ ने खुद अरदास की, ''हे सच्चे पातशाह! हम आपकी संगत की सेवा करने आए हैं और अवश्य करके जाएंगे। इस रास्ते पर चलते हुए यदि हमारे शरीर भी कुर्बान हो जाएँ तो हमें शक्ति प्रदान करना और हमारी अंग-संग सहायता करना।''[८]

सिक्खों ने फ़ैसला किया कि हम यहाँ रेलगाड़ी अवश्य रोकेंगे। इसके लिए चाहे हमें अपनी जान तक क्यों न न्यौछावर करनी पड़े। *''जउ तउ प्रेम खेलण का चाउ॥ सिरु धरि तली गली मेरी आउ॥''* पर पहरा देते हुए सिंघ रेल की पटरी पर जा बैठे। भाई करम सिंघ और भाई प्रताप सिंघ सबसे आगे थे। इनके साथ सरदार गंगा सिंघ, सरदार निहाल सिंघ, सरदार तारा सिंघ, सरदार फकीर सिंघ, सरदार कलिआण सिंघ तथा अन्य सिंघ-सिघंणिआं थे।[९] सिंघों को पटरी से हटाने के लिए जद्दोजहद की गई। रेलगाड़ी आई मृत्यु के भय से मुक्त सिंघ अडिग अवस्था में पटरी पर बैठे रहे। भाई करम सिंघ और भाई प्रताप सिंघ के शरीर गाड़ी के नीचे आने से कुचले गए। उनके शरीर गाड़ी के पहियों में फंसा हुआ था। दोनों शहीदों की अभी साँस चल रही थी। जब उन्हें गाड़ी के पहियों में से बाहर निकाला जाने लगा तो उन्होंने कहा, ''गाड़ी में बैठे वीर सिंघों की सेवा कर लो, हमारी संभाल फिर कर लेना।''[१०]

अंतिम साँसों तक सिंघों का ध्यान जत्थे के सिंघों को लंगर छकाने की तरफ था। शहीद होने से पहले भाई करम सिंघ ने संगत से कहा, ''क्या गुरु के लालों की सेवा संपूर्ण हो गई है?'' 'हाँ' का जवाब मिलने पर भाई साहिब ने अकाल पुरख का शुक्राना किया कि ''हे सच्चे पातशाह! आप धन्य हो, जो मेरे इस शरीर को संगत की सेवा की ख़ातिर लगवा दिया है।''[११] भाई साहिब का शरीर इंजन के पहियों में फंसा हुआ था, फिर भी वे आनंदमयी अवस्था में थे। भाई साहिब के शरीर को गंभीर रूप से घायल अवस्था में बाहर निकाला गया।

सिंघों ने निडरता की मिसाल पेश करते हुए

पटरी पर बिछ कर शहादत प्राप्त की और गुरु की रहमत का सदका सचमुच ही रेलगाड़ी को रोक कर इतिहास सृजित कर दिया। गुरु के प्यारों ने सिक्खों के शहादतों के लासानी इतिहास को दोहरा दिया। जब मृत्यु सामने खड़ी हो तो बड़े-बड़े लोगों की हिम्मत जवाब दे जाती है, मगर सिंघों द्वारा गुरु के आगे की गई अरदास ने यह करिश्मा कर दिखाया। ज्ञानी सोहण सिंघ सीतल के अनुसार, डेढ़ घंटा गाड़ी खड़ी रही। रेलगाड़ी में सवार सिंघों को गुरु का लंगर छकाया गया। पुलिस वाले आश्चर्य से भरे हुए पीछे खड़े थे। जत्थेदार के हुक्म के बाद संगत पटरी से हटी और फिर रेलगाड़ी आगे गई।[१२] इसके कुछ समय बाद भाई करम सिंघ शहादत प्राप्त कर गए। भाई प्रताप सिंघ की शहादत अगले दिन हुई बतायी जाती है। ज्ञानी सोहण सिंघ सीतल ने 'गड्डी' छंद के माध्यम से भाई करम सिंघ की शहादत के दृश्य को इस तरह कलमबद्ध किया है :

एने चिर नूं करम सिंघ ताईं
चुक्क के लिआईआं संगतां
सिंघ आण के दीदारे कीते
जेल जाण वालिआं दे
.फ़तहि आखरी करम सिंघ बोली
ओधरों सवास मुक गए
दूजा भाई परताप सिंघ सूरा
जीहने बाही जत्थेदार दी
मल्ल लई ! मल्ल लई !!
खालसे ने रत्त डोल के गड्डी ठल्ह लई ![१३]

सिक्ख इतिहास सचमुच ही शहीदों के खून से सींचा हुआ है। इस साके में भी शहीदों ने अपना खून बहा कर गतिमान रेलगाड़ी को रोक दिया। शहीद भाई करम सिंघ और भाई प्रताप सिंघ के पार्थिव शरीर को दाह-संस्कार के लिए ले जाते समय रावलपिंडी में बहुत भारी जुलूस निकाला गया। इस जुलूस में लगभग पंद्रह हज़ार की संख्या में संगत शामिल हुई और फिर दोनों सिंघों का दाह-संस्कार रावलपिंडी में १ नवंबर, १९२२ ई. को लई नदी के किनारे किया गया।[१४]. शहादत के समय भाई करम सिंघ की आयु लगभग ३७ वर्ष थी।

भाई करम सिंघ और भाई प्रताप सिंघ महान योद्धाओं ने शहादत देकर 'सूरमे सिर देंदे हन, पर सिरड़ नहीं छड्डुदे' की मिसाल पेश की। उनकी शहादत हमें सिक्खी में आस्था, स्थिरता, परिपक्वता, निष्कामता और निर्भयता की प्रेरणा देती है। सिक्ख इतिहास इन महान योद्धाओं का गुणगान हमेशा करता रहेगा।

भाई करम सिंघ से सम्बन्धित यादगारें

गुरुद्वारा भाई करम सिंघ जी शहीद श्री पंजा साहिब : शहीद भाई करम सिंघ की याद में स्थापित यह गुरुद्वारा साहिब बाज़ार नंबर ६, गुरु नानक पुरा (कित्ते) सुलतानविंड रोड के निकट श्री अमृतसर में सुशोभित है। गुरुद्वारा प्रबंधकों से प्राप्त जानकारी के अनुसार यह गुरुद्वारा १९४७-४८ ई. के लगभग 'गुरुद्वारा दरजीआं'

नाम पर स्थापित किया गया था। बाद में गुरुद्वारा साहिब का नाम शहीद भाई करम सिंघ के नाम पर रखा गया। गुरुद्वारा साहिब में लगी पुरानी सिलों में गुरुद्वारा साहिब का नाम कशत्तरी (क्षत्रिय) गुरुद्वारा भाई करम सिंघ जी शहीद लिखा मिलता है। वर्तमान समय में गुरुद्वारा साहिब का नाम 'गुरुद्वारा भाई करम सिंघ जी शहीद श्री पंजा साहिब' है। गुरुद्वारा साहिब की प्रबंधक कमेटी का चयन तीन वर्ष बाद होता है। गुरुद्वारा साहिब में होम्योपेथिक डिस्पेंसरी भी चल रही है। प्रतिदिन अमृत वेले (प्रात: काल) और संध्या के समय दीवान सजते हैं। रविवार को प्रात: काल के दीवान में 'सुखमनी साहिब' का पाठ किया जाता है। और भी गुरुपर्व श्रद्धा सहित मनाए जाते हैं।

इसके अलावा निकट से गुजरने वाले लिंक रोड का नाम 'शहीद भाई प्रताप सिंघ, शहीद भाई करम सिंघ मार्ग' रखने से सम्बन्धित भी एलाननामा हो चुका है।

संदर्भिका :

१. Harjinder Singh Dilgeer, The Sikh Reference Book, Page 473, Harbans Singh (Ed.), Encyclopedia of Sikhism, Vol. II, Page 436 तथा डॉ. रतन सिंघ (जग्गी) (संपा.), सिक्ख पंथ विश्वकोश, भाग दूसरा, पृष्ठ ५४९. ज्ञानी खज़ान सिंघ ने भाई साहिब का जन्म १ माघ, १९४२ बिक्रमी (१८८५ ई.), दिन गुरुवार का बताया है, सिक्ख दी आत्मिक शक्ति, गुरमति ट्रैक्ट सोसायटी, लाहौर, १९३०, पृष्ठ ७. ज्ञानी नाहर सिंघ ने भाई करम सिंघ का जन्म १ मार्गशीर्ष, १९४० बिक्रमी को श्री अनंदपुर साहिब में होना बताया है। इतिहास श्री पंजा साहिब, ज्ञानी नाहर सिंघ, पृष्ठ ५६, फुट नोट।

२. ज्ञानी खज़ान सिंघ, सिक्ख दी आत्मिक शक्ति, पृष्ठ ७-१०, कई स्रोत श्री पंजा साहिब में भाई करम सिंघ द्वारा अमृत छकना लिखते हैं।

३. *The Encyclopedia Of Sikhism* के अनुसार भाई करम सिंघ के कीर्तन से प्रभावित होकर गुरुद्वारा कमेटी ने उन्हें स्थायी रूप से नौकरी पर रख लिया था। Vol.II page 436.

४. ज्ञानी खज़ान सिंघ, सिक्ख दी आत्मिक शक्ति, पृष्ठ ११-१३.

५. उपरोक्त, पृष्ठ १५.

६. प्रताप सिंघ, अकाली लहर, पृष्ठ २८३.

७. ज्ञानी सोहण सिंघ सीतल, सीतल किरणां, लाहौर बुक शॉप, लुधियाना, २०१३, पृष्ठ ६३.

८. ज्ञानी खज़ान सिंघ, सिक्ख दी आत्मिक शक्ति, पृष्ठ १७.

९. 1922 Train Massacre Morcha Punja Sahib, Discoversikhism.com

१०. प्रताप सिंघ, अकाली लहर, पृष्ठ २८३.

११. ज्ञानी खज़ान सिंघ, सिक्ख दी आत्मिक शक्ति, पृष्ठ २०.

१२. ज्ञानी सोहण सिंघ सीतल, सीतल किरणां, पृष्ठ ६७.

१३. वही, पृष्ठ ६५-६७.

१४. Harbans Singh (Ed.), The Encyclopedia of Sikhism, Vol. II, page. 437, डॉ. रतन सिंघ (जग्गी) (संपा.) सिक्ख पंथ विश्वकोष, भाग दूसरा, पृष्ठ ५४९.

साका श्री पंजा साहिब के चश्मदीद गवाह माता हरनाम कौर का संक्षिप्त जीवन-परिचय

-डॉ. रणजीत कौर पंनवां*

साका श्री पंजा साहिब का गुरुद्वारा प्रबंध सुधार लहर में अहम स्थान है। यह साका ३० अक्तूबर, १९२२ ई. को हसन अब्दाल (पाकिस्तान) रेलवे स्टेशन के स्थल पर घटित हुआ था। इस साके में शहीद हुए भाई प्रताप सिंघ और भाई करम सिंघ के दृढ़चित्त संकल्प की मिसाल अन्य कहीं नहीं मिलती। इन शहीद सिंघों ने गुरुद्वारा प्रबंध सुधार लहर के कैदी फ़ौजी वीरों की उदर-पूर्ति के लिए अपने प्राण न्यौछावर कर दिए और गुरु के लंगर की परंपरा को ख़ून बहा कर निभाते हुए गतिमान रेलगाड़ी को रोक दिया। इस संबंध में ज्ञानी सोहण सिंघ सीतल 'गड्डी' छन्द में लिखते हैं :

अड़गी, अड़गी, अड़गी।
सिंघ दी रत्त वेख के गड्डी खढ़गी।

अकाली लहर के अंतर्गत बीसवीं सदी के पहले दो दशक में घटित मोर्चों, साकों के बारे में लेखक अमरजीत चंदन लिखते हैं कि "बीसवीं सदी के शुरू में गुरुद्वारों को मसंदों से, देश को फिरंगियों से मुक्त करवाने के लिए साका श्री ननकाणा साहिब, गुरुद्वारा गुरु का बाग का मोर्चा, नाभा और जैतो का मोर्चा हक, न्याय, दृढ़ प्रतिज्ञा तथा सर्वोत्तम सिक्ख आदर्श के करामाती मोर्चे थे।[१] वास्तव में इस लहर में सिंघों, सिंघणिओं, बुजुर्गों, बच्चों द्वारा निभाई गई भूमिका किसी चमत्कार से कम नहीं थी। इस लेख में हम जिस शख्सियत के बारे में वर्णन कर रहे हैं, जिनके पति ने साका श्री पंजा साहिब में अपनी शहादत देकर विलक्षण योगदान दिया, वे थे माता हरनाम कौर, पत्नी शहीद भाई प्रताप सिंघ।

जन्म और बचपन : आज्ञाकारी, प्रण- पालक, दृढ़ संकल्पी शहीद पति की पत्नी माता हरनाम कौर का जन्म १९०३ ई. में पिता सरदार कपूर सिंघ लोहियांवाला, गुजरांवाला तथा माता ईशर कौर के घर हुआ। माता हरनाम कौर अपने माता-पिता की इकलौती संतान थीं। आपका बचपन धार्मिक माहौल में बीता, जिस कारण आप जी बड़े संस्कारवान और धैर्य वाले थे। आप पाँचवीं कक्षा उत्तीर्ण थे और पंजाबी भाषा बहुत बढ़िया पढ़-लिख लेते थे। आपने अमृत-पान, अनंद कारज से पहले कर लिया था।

अनंद कारज और संतान : १५ वर्ष की आयु में ११ अक्तूबर, १९१८ ई. को आप जी का

*वरिष्ठ रिसर्च स्कालर, सिक्ख इतिहास रिसर्च बोर्ड, शिरोमणि गु. प्र. कमेटी, श्री अमृतसर—१४३००६, फोन : ९८१४८-५१५१३

अनंद कारज भाई प्रताप सिंघ सुपुत्र सरदार सरूप सिंघ के साथ लोहियांवाला, गुजरांवाला में हुआ। भाई प्रताप सिंघ फ़ौज में शिमला में क्लर्क (लिपिक) के पद पर तैनात थे। कुछ समय पश्चात् भाई प्रताप सिंघ का स्थानांतरण रावलपिंडी हो गया और वे परिवार सहित यहाँ रहने लगे। तत्पश्चात् आपके घर सुंदर पुत्र तरलोक सिंघ ने जन्म लिया। परिवार द्वारा दी जानकारी के अनुसार बच्चा दो-ढाई वर्ष की आयु में ही बहुत अच्छी जोड़ी (तबला) बजा लेता था। प्रभु-हुक्म के आगे किसी का ज़ोर नहीं चलता। दो-ढाई वर्ष की आयु में ही तरलोक सिंघ गर्म पानी में गिरने के कारण अकाल प्रस्थान कर गया। घटना इस प्रकार घटी कि गुरुद्वारा श्री पंजा साहिब में पुत्र तरलोक सिंघ और एक अन्य हमउम्र बच्चा खेल रहे थे। गुरुद्वारा साहिब में लंगर में बड़ी वलटोयी (बड़ी कड़ाही) में पानी उबल रहा था। खेलते-खेलते दूसरे बच्चे से तरलोक सिंघ को धक्का लगा। वह उबल रहे पानी में गिरने के कारण, गंभीर रूप से झुलस गया और अकाल प्रस्थान कर गया। इस घटना के समय भाई साहिब वहां मौजूद नहीं थे। पता चलने पर भाई साहिब ने अपनी पत्नी माता हरनाम कौर को समझाया कि तरलोक सिंघ को धक्का देने वाले बच्चे को कभी भी दोष मत देना और न ही कभी उस पर आक्रोशित होना। उसके साथ भी तरलोक सिंघ के जितना ही प्यार जताना है। बच्चे का उसके साथ कोई वैर नहीं था। यह तो नादान था। यह ईश्वरीय आदेश था, जो हो गया। माता हरनाम कौर भी इतने आज्ञाकारी और क्षमा-भावना वाले थे कि उन्होंने उस बच्चे के साथ सदा प्रेम ही किया। पति द्वारा वाहिगुरु के हुक्म को मीठा समझ कर मानने और रुदन न करने संबंधी समझाने पर माता हरनाम कौर ने वाहिगुरु की रज़ा को माना। माता हरनाम कौर ने साक्षात्कार के समय स्वयं ज्ञानी भजन सिंघ को बताया था कि भाई प्रताप सिंघ ने अडिग अवस्था में रहते हुए पुत्र के अंतिम संस्कार के समय अर्थी तैयार की। अर्थी शमशान घाट की तरफ ले जाते समय बैंड-पार्टी बुलाई और वाहिगुरु की रज़ा में राज़ी रहने संबंधी शबदों का गायन किया। आज्ञाकारी पत्नी होने के नाते उन्होंने पति द्वारा बैंड-पार्टी आदि बुलाए जाने का कोई विरोध नहीं किया, बल्कि धार्मिक भावना वाले पति की शिक्षा को सर्वोपरि मानते हुए वाहिगुरु के हुक्म के प्रति समर्पित रहे।

भाई साहिब की शहादत के बाद माता हरनाम कौर ससुराल घर में अकालगढ़, गुजरांवाला में रहते थे। भाई साहिब की शहादत के कुछ महीने बाद माता हरनाम कौर को कोख से, १५ जुलाई १९२३ ई. को पुत्री जोगिंदर कौर ने गाँव अकालगढ़, गुजरांवाला में जन्म लिया। पूरा परिवार पुत्री को पुत्रों की भांति प्यार करता

था। पंथक-गलियारों में भी पुत्री को 'पंथ की पुत्री' कह कर सम्मान दिया जाता था। बीबी जोगिंदर कौर बचपन से ही सिक्ख समागमों और संगत में कीर्तन व सेवा करने तथा भाषण आदि देने में अग्रणी रहते थे। उन्होंने अपने पिता के समकालीन सिक्खों और माता हरनाम कौर से साके संबंधी पूरी साखी सुनी थी। वे मानते थे कि उनके पिता व उनके साथियों ने अपना ख़ून बहा कर श्री गुरु नानक पातशाह की कृपा से रेलगाड़ी को रोका था। आप जी गुरुद्वारा प्रबंध सुधार लहर के समकालीन गवाहों में आखिरी कड़ी थे। आप जी बचपन से ही साका श्री पंजा साहिब को किसी चमत्कार से कम नहीं मानते थे। बीबी जोगिंदर कौर का विवाह १५ वर्ष की आयु में गुजरांवाला के सिक्ख भाईचारे में सरदार संपूरन सिंघ के साथ १९३७ ई. में हुआ। विवाह में प्रमुख सिक्ख संस्थाओं की शख़्सियतों, संतों, महापुरुषों तथा अन्य राजनीतिज्ञों ने शिरकत की थी। सरदार संपूरन सिंघ उत्तरी भारत में व्यापार करने के लिए एक फ़ौजी सामान के आपूर्ति ठेकेदार थे। भारत-पाक विभाजन के बाद आप जी पंजाब के जलंधर शहर में बस गए थे।

पंथ-सेवा : भाई प्रताप सिंघ के रावलपिंडी रहते हुए गुरुद्वारा प्रबंध सुधार लहर अपने पूरे यौवन पर थी। साका श्री ननकाणा साहिब घटित होने के बाद अंग्रेज़ सरकार ने काले रंग की पगड़ी बाँधने पर पाबंदी लगाई हुई थी। भाई प्रताप सिंघ काले रंग की पगड़ी बाँध कर ड्यूटी पर चले गए। अंग्रेज़ अधिकारी के एतराज़ करने पर अकालियों का साथ देते हुए, भाई साहिब इस्तीफ़ा देकर घर आ गए और पक्के तौर पर गुरुद्वारा प्रबंध सुधार लहर में हिस्सा लेने लगे। भाई साहिब ने जब स्वदेशी कपड़े अपनाते हुए विदेशी कपड़े जला दिए तो उनकी पत्नी ने भी उनका पूर्ण साथ दिया। दंपत्ति जोड़े ने काले और नीले रंग की वेशभूषा धारण करनी शुरू कर दी।[२]. स्वदेशी का प्रयोग करने के संबंध में कवि संतोख सिंघ लिखते हैं :

जद असीं सुतंतर रहिंदे सी।
सभ देसी कपड़े पांदे सी।. . .
जद कपड़ा बाहरों आया है।
इस देस कंगाल कराया है।
कोई पिछली चाल पलटे जी।
फिर चरखा घूकर घत्ते जी।
घर तीवीं सूतर कत्ते जी।
कत्त कत्तके बोले फते जी।[३]

१९२० ई. में गुरुद्वारा श्री पंजा साहिब को महंत संत सिंघ के प्रबंध से मुक्त करवाते समय भी भाई साहिब सबसे आगे थे। २४ नवंबर, १९२० ई. को जब श्री पंजा साहिब में टिड्डी दल की भांति हिंदू लोग महंत की मदद के लिए आ गए थे तो उसी समय ज्ञानी शेर सिंघ को भाई करतार सिंघ झब्बर का खत मिला कि सख़्त

घेरा पड़ गया है। सिंघ डटे हुए हैं, परन्तु पुलिस का व्यवहार अच्छा नहीं, झटपट पहुँचो! उसी वक्त रावलपिंडी शहर में मुनादी कराई गई कि चलो पंजा साहिब, सिंघ तकलीफ़ में हैं। दो-ढाई घंटे के अंदर रावलपिंडी की संगत लारियों, गाड़ियों पर लगभग दो सौ की संख्या में ''तेरी आ गई फ़ौज अकाली'' गीत गाती हुई, शांतमयी मोर्चा लगाने के लिए पहुँच गई।[४] गुरुद्वारा साहिब का प्रबंध पंथक हाथों में आने पर भाई प्रताप सिंघ को मैनेजर और सचिव बनाया गया। भाई साहिब ने बिना तनख़्वाह के निष्काम सेवा की। कुछ समय बाद रिहायश भी यहीं पर रख ली। निष्काम सेवा करते हुए माता हरनाम कौर को पारिवारिक जिम्मेदारियां निभाते हुए आर्थिक समस्याओं का सामना भी करना पड़ा। माता हरनाम कौर ने कभी पति के सामने शिकायत नहीं की थी कि घर का गुज़ारा कठिनता से चल रहा है। संतोष और धैर्य की मूर्ति माता हरनाम कौर गुरबाणी पढ़ते हुए संगत की सेवा में हमेशा तत्पर रहते।

साका श्री ननकाणा साहिब (१९२१ ई.) घटित होने के बाद भाई प्रताप सिंघ अंग्रेज़ सरकार के विरोध में शामिल हुए। वे परिवार को बताए बिना ही श्री ननकाणा साहिब दो दिन रहे। दो दिन बाद जब घर आए तो माता हरनाम कौर ने कहा कि ''क्या घर पर बताना आपका फ़र्ज़ नहीं था?'' भाई साहिब ने बड़ा तर्कसंगत जवाब दिया कि ''जो इससे भी बड़ा और प्रथम फ़र्ज़ था, मैंने उसे निभाने को प्राथमिकता दी। आपको पता है कि श्री ननकाणा साहिब में कितनी शहादतें हो गई हैं? हमारा प्रथम कर्त्तव्य है, उनके लिए 'हा' का नारा मारना।'' यह थी उनकी कर्त्तव्यपरायणता की भावना, जिसे निभाते हुए भाई साहिब गिरफ़्तार भी हुए। वे दृढ़ संकल्पी और दूरअंदेशी अकाली वीर थे।

साका श्री पंजा साहिब और माता हरनाम कौर की भूमिका : ३० अक्तूबर, १९२२ ई. को गुरुद्वारा गुरु का बाग़ के पेन्शनी कैदी वीरों को अटक किले की जेल में भेजा जाना था। रेलवे स्टेशन हसन अब्दाल में कैदी सिंघों को परशादा छकाने के लिए रेलवे ट्रैक पर जो संगत बैठी थी, उनमें माता हरनाम कौर भी महिला जत्थे का नेतृत्व करते हुए, अपने पति के बराबर बैठे थे। रेल इंजन ऊपर चढ़ने से वे भी गंभीर रूप से घायल हुए थे और उन्हें कुछ गुप्त चोटें भी आई थीं, जिस कारण उन्हें कई महीने अस्पताल दाख़िल रह कर इलाज करवाना पड़ा था। शहादत के समय भाई साहिब २४-२५ वर्ष के थे और चार वर्ष पूर्व विवाह हुआ था। माता हरनाम कौर की आयु उस समय १८ वर्ष थी और वे गर्भवती थीं।

भाई प्रताप सिंघ रेलगाड़ी के नीचे आकर गंभीर रूप से घायल हो गए तो उन्होंने माता हरनाम कौर से कहा कि ''आप मेरी धर्म-पत्नी

हो। आप मेरी इस हालत पर मत रोना, बल्कि वाहिगुरु का धन्यवाद करना और प्रसन्न रहना कि मैं सिक्खी के इम्तिहान में पास हो गया हूं।'' रज़ा में रहते हुए और शहीद पति की नसीहत को मानते हुए माता हरनाम कौर ने कभी भी पति-वियोग का रुदन एवं अफ़सोस नहीं किया। वफ़ादारी से पति के साथ किये प्रण को निभाया। अमरजीत चंदन[५] माता हरनाम कौर की इस अवस्था के लिए 'चमत्कार' शब्द का इस्तेमाल करता है। चंदन के अनुसार पत्नी द्वारा इतनी धैर्यता और दृढ़ता के साथ जीवन जीना भी किसी चमत्कार से कम नहीं है।[६]

चश्मदीद गवाह के तौर पर उन्होंने ज्ञानी भजन सिंघ के साथ मुलाकात[७]. के दौरान बताया कि रेलगाड़ी का चालक पाकिस्तान के गुजरात शहर का अराईं मुसलमान था। रिटायर जज द्वारा जब इस केस की जांच-पड़ताल की गई तो उसने चालक से पूछा कि ''क्या उसे रेलगाड़ी रोकने का आदेश नहीं था?'' चालक ने आश्चर्य भरपूर ऐतिहासिक जवाब जजों के ट्रिब्यूनल के सामने दिया कि ''मुझे रेलगाड़ी रोकने का आदेश नहीं था और मैं गाड़ी पूरी रफ़्तार के साथ चला रहा था, लेकिन जब गाड़ी सिंघों के साथ टकराई तो मुझे ऐसे लगा, जैसे गाड़ी किसी बड़े पर्वत के साथ टकरा गई हो। मेरा हाथ अपने आप वैकम से छूट गया और गाड़ी रुक गई।'' इंजन की जांच करने पर भी पता चला कि गाड़ी की ब्रेक नहीं लगाई गई थी। चालक के अनुसार, ''मेरे लिए यह किसी चमत्कार से कम नहीं था। उस समय क्या घटित हुआ, मेरी समझ से बाहर था। पता नहीं किस शक्ति ने गाड़ी रोक दी।'' चालक को ओहदे से बरख़ास्त कर दिया गया, मगर उसके बयान ने यह साबित कर दिया कि उस वक्त सिक्ख संगत बेखौफ होकर अरदास करके गुरबाणी का जाप कर रही थी। अकाल पुरख ने खुद यह करिश्मा किया था और गाड़ी रुक गई। गुरबाणी फरमान करती है :

हरि जुगु जुगु भगत उपाइआ
पैज रखदा आइआ राम राजे ॥
हरणाखसु दुसटु हरि मारिआ प्रहलादु तराइआ ॥
अहंकारीआ निंदका पिठि देइ
नामदेउ मुखि लाइआ ॥
जन नानक ऐसा हरि सेविआ
अंति लए छडाइआ ॥ (*पन्ना ४५१*)

दृढ़-प्रतिज्ञ जीवन की अहम घटनाएँ : पति की शहादत के बाद अकालगढ़ रहते हुए एक बार माता हरनाम कौर पर कमरे की छत गिर गई और गाँव के डॉक्टर के अनुसार उनकी पसलियां टूट गई थीं। उन्हें अगले दिन गुजरांवाला अस्पताल में दाख़िल करवाना था। रात बीतने के बाद अगली सुबह माता हरनाम कौर ने कहा कि ''कोई ज़रूरत नहीं। मेरा इलाज हो चुका है। मैंने गुरु नानक पातशाह के

चरणों में विनती की है। सब कुछ ठीक हो जायेगा।'' ऐसा ही हुआ। बिना ऑपरेशन, बिना इलाज ही माता हरनाम कौर की पसलियां जुड़ गईं और वे स्वस्थ हो गए।

(लगभग) १९४७ ई. के विभाजन के पश्चात् पुत्री जोगिंदर कौर के परिवार के साथ माता ईशर कौर और माता हरनाम कौर जलंधर रहने लगे। माता ईशर कौर को परिवार के सभी सदस्य 'बेबे जी' और माता हरनाम कौर को सभी 'भाभी जी' कह कर बुलाते थे। माता हरनाम कौर में इतनी हिम्मत और उत्साह था कि वे रात-दिन काम करते रहते थे। वे अमृत वेले दो बजे उठते थे। स्नान करके, गुरबाणी पढ़ते और कीर्तन करते थे। वे घर का काम-काज (दूध दुहना, मथना) के समय भी गुरबाणी-जाप करते रहते थे। वे जहाँ अपनी पेंशन गरीबों में बाँट देते थे, वहीं शहीद भाई प्रताप सिंघ के नाम पर चल रहे शहीद बाबा प्रताप सिंघ मेमोरियल सीनियर सेकंडरी स्कूल, सुलतानविंड रोड, श्री अमृतसर की भी यथायोग्य मदद करते रहे। माता हरनाम कौर की शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की तरफ से शहीदी परिवार वाली पेंशन लगी हुई थी। माता हरनाम कौर अपने नाती के साथ श्री अमृतसर शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के मुख्यालय से लगभग १९६५ ई. तक पेंशन लेने आते रहे। उन्होंने कभी भी अपने लिए किसी विशेष व्यवहार की माँग नहीं की। वे हमेशा श्री हरिमंदर साहिब की परिक्रमा में रात व्यतीत करते थे। सराय में कमरे की माँग नहीं करते थे। उन्हें २५ रुपए पेंशन मिलती थी, जिसे वे घर के नौकरों या बेसहारा लोगों में बाँट देते थे। घर की आर्थिक स्थिति अच्छी थी और परिवार को मानसिक संतुष्टि थी। कभी-कभी पारिवारिक सदस्य कहते कि ''आप बुजुर्ग हो गए हो, पेंशन लेने मत जाया करो।'' आगे से माता जी जवाब देते कि ''यह आपके नाना जी की निशानी और किरत-कमाइ है। मैं तो केवल उनकी किरत-कमाई को गरीबों में बाँटने के लिए माध्यम का काम कर रही हूँ। गुरु-घर से मिल रही दात को बाँटना धर्म-कर्म है।'' बीबी जोगिंदर कौर जब सपरिवार जलंधर छोड़ कर दिल्ली चले गए तो फिर माता हरनाम कौर ने पेंशन लेने हेतु आना बंद कर दिया।

माता हरनाम कौर बहुत परोपकारी और बहुत सेवा-भावना वाले थे। जब आप जलंधर में अपनी पुत्री के साथ रहते थे, उस समय (१९६० ई. में) आप जी के जेठ भाई तारा सिंघ का परिवार भी जलंधर में रहता था। उनके किरायेदार की पत्नी का क्षय रोग के कारण देहांत हो गया। (छूत रोग की मान्यता के कारण) उसके मृतक शरीर को कोई भी हाथ न लगाए। यहां तक कि उसके अपने ख़ून के रिश्तेदार, परिवार के सदस्य भी छूने से डरते थे।

उसी समय भाई तारा सिंघ की पत्नी माता आगिआ कौर ने माता हरनाम कौर को संदेश भेजा और मृतिका की हालत के बारे में बताया। बिना देर किए माता जी उसी समय उनके घर पहुँच गए। उन्होंने किसी भी प्रकार की छूत की आशंका से निश्चिंत होकर मृतक शरीर को स्नानादि करवा कर उसकी सभी अंतिम रस्में अपने हाथों से पूर्ण की।

माता हरनाम कौर का राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंघ[९] बहुत सम्मान करते थे। वे जब भी राजनीतिक पार्टी के संबंध में कोई बात करते तो माता जी कहते थे कि ''हम तो पक्के अकाली हैं। हमारे पास और कोई बात मत करना।'' वे अपने आप को हमेशा अकाली बताते थे। ज्ञानी जैल सिंघ १९७६ ई. में पंजाब के मुख्यमंत्री थे। उनकी कोशिशों का सदका सरहिंद में १९७६ ई. में साका श्री पंजा साहिब के शहीदों का शहीदी दिवस मनाया गया था। उस शहीदी समारोह में माता हरनाम कौर अपनी पुत्री के परिवार और भाई प्रताप सिंघ के बड़े भ्राता भाई करम सिंघ के साथ शामिल हुए। उन्होंने ज्ञानी सोहण सिंघ सीतल द्वारा रचित 'गड्डी' छंद[१०] स्टेज पर बड़े जोश के साथ गाया था। वे जरा भी भावुक नहीं हुए थे।

वे बड़ी बहादुरी के साथ पति द्वारा दी गई कुर्बानी की साखी सुनाया करते थे और पल भर के लिए भी भावुक नहीं होते थे। अक्सर ही माता हरनाम कौर शहीदों की शान में ज्ञानी सोहण सिंघ सीतल द्वारा लिखित 'गड्डी' छंद का गायन बड़े जोश में आकर करते थे। भारत और पंजाब सरकार द्वारा कई धार्मिक समारोहों/दीवानों में उनका मान-सम्मान किया गया था। साके के बाद माता जी लगभग ६० वर्ष तक जीवित रहे। अपनी इकलौती पुत्री बीबी जोगिंदर कौर के पास रहते हुए माता जी ७९ वर्ष की बहादुरों वाली आयु व्यतीत कर फरवरी, १९८२ ई. में ग्रेटर कैलाश-२, नई दिल्ली में अकाल प्रस्थान कर गए। माता जी के अंतिम संस्कार की रस्मों के समय और श्रद्धांजलि समारोह में भी राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंघ ने शिरकत की थी।

स. हरिंदरपाल सिंघ लूथरा का नानी हरनाम कौर के बारे में निजी अनुभव :

स. हरिंदरपाल सिंघ लूथरा के पास ज्ञानी सोहण सिंघ सीतल रचित 'गड्डी' छंद की रिकार्डिंग है। वे उस बाबत बताते हैं— ''मैंने १९८० ई. में अपने नानी जी की उस समय रिकार्डिंग की थी, जब वे स्वस्थ नहीं थे, परंतु फिर भी उनकी आवाज़ को रिकार्ड कर लिया गया। उनके पास उस समय का जोश और दृष्टि थी, जो बहुत ही वचनबद्ध सिक्खों वाली थी। उनके अनुसार उस समय सिंघों ने एक दृढ़ भावना के साथ लंगर-पानी की सेवा करने के लिए गुरु साहिब को संगत की अरदास को पूरा

करने के लिए प्रदर्शित किया। माता हरनाम कौर भी जीवन-आदर्श को पूरी तरह समर्पित थे। उन्हें अपनी ज़िंदगी और पति द्वारा शहादत से संबंधित लिए फ़ैसले के प्रति कोई दुख नहीं था। ईश्वरीय आदेश मानना, हुक्म में रहना, बिना किसी शिकायत के संतोष में रहते हुए वे अपना जीवन चढ़दी कला में व्यतीत करते थे और उन्होंने किया भी। हमने प्रतिदिन बड़े होते हुए उनमें ये गुण प्रत्यक्ष रूप से देखे थे। छोटी आयु में हम मज़ाक में कहा करते थे कि अगर नाना जी जिंदा होते तो वे कोई मंत्री या राजनीतिज्ञ बन जाते। नानी जी बिना क्रोध में आए बड़े ही सहज भाव में कहते, ''शहीद (साहिब) का ओहदा सबसे ऊँचा होता है।''

''माता हरनाम कौर और उनके पति भाई प्रताप सिंघ कुर्बानी की भावना और ज़िंदगी के असल अर्थों का ज्ञान रखते थे। ज़िंदगी का उद्देश्य उनके लिए स्पष्ट था। वे अंदरूनी 'जोति सरूप' को जान चुके थे और एक अकाल पुरख के साथ रहते थे। उस समय मेरे (हरिंदरपाल सिंघ लूथरा) के लिए खुद गुरबाणी पढ़े बिना शबदों के अर्थ समझना कठिन था।

माता हरनाम कौर ने साका श्री पंजा साहिब को प्रत्यक्ष रूप से देखा था और अपने तन पर झेला भी था। माता हरनाम कौर गुरबाणी-प्रेमी, बहुत मेहनती, प्रणपालक, आज्ञाकार, हाथों से सेवा करने वाले, परोपकारी तथा अन्य बहुत-से आध्यात्मिक, सदाचारक गुणों से ओत-प्रोत थे। हमें उनके समर्पित और परोपकारी जीवन से शिक्षा अवश्य लेनी चाहिए।

संदर्भिका :

१. कलम दी करामात, अमरजीत चंदन, Sikhchintan. com

२. लगभग १९४७ ई. तक माता जी काले व नीले रंग का ही पहरावा धारण करते रहे।

३. कविता, 'फिर चरखा घूकर घते जी!', अकाली अखबार, लाहौर, ३ नवंबर, १९२०

४. गोपाल सिंघ हकीम, श्री पंजा साहिब दा संपूर्ण इतिहास, लेखक खुद प्रकाशक, १९३९, पृष्ठ ५६

५. कलम दी करामात, अमरजीत चंदन, Sikhchintan. com

६. उपरोक्त।

७. punjabkesari. in

८. बीबी जोगिंदर कौर के बच्चे बताते हैं कि उन्होंने कभी नानी जी को दिन में स्नान करते नहीं देखा था। कहने से तात्पर्य कि वे हमेशा उनके उठने से पहले (अमृत वेले) स्नान कर लिया करते थे।

९. ज्ञानी जैल सिंघ, शहीद सिक्ख मिशनरी कॉलेज, श्री अमृतसर के विद्यार्थी थे।

१०. सरदार हरिंदरपाल सिंघ लूथरा (नाती शहीद भाई प्रताप सिंघ व माता हरनाम कौर) ने बताया कि यह रिकार्डिंग पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला के Oral history Cell में हैं।

सहज सुभाइ होवै सो होइ

– स. जोगिंदर सिंघ*

मानव के स्वभाव को तीन गुणों में बांटा जा सकता है

— *रजो गुण, तमो गुण और सतो गुण।*

— *त्रिहु गुण महि वरतै संसारा॥*

(पन्ना ३८९)

— *रज गुण तम गुण सत गुण कहीऐ*
इह तेरी सभ माइआ॥ *(पन्ना ११२३)*

— *रज तम सत कल तेरी छाइआ।*

(पन्ना १०३८)

रजो गुण वो है जो शक्ति, ऊर्जा के साथ भरा पड़ा है। इसका मालिक टिक कर नहीं बैठ सकता। उसे कुछ न कुछ करने में प्रसन्नता प्राप्त होती है। वह हर काम को जल्दी से, तेज़ी और फुर्ती के साथ करता है।

तमो गुणी आलसी है, शक्तिहीन है। वह काम करने से कतराता है, टालमटोल करता है। निठल्ले बैठे रहना उसे पसंद है।

सतो गुणी न सुस्त है, न मुस्तैद है, न तेज़ है, न धीरे। वह काम करता तो है, मगर विचारता ज़्यादा है। इस कारण या तो काम होता ही नहीं या गलत हो जाता है। वह विचारते-विचारते उलझन में पड़ जाता है। वह तमो गुणी की तरह सुस्त नहीं होता। वह करना तो चाहता है मगर सही राह का चयन नहीं कर पाता।

यह सारा विभाजन कर्मों की गति के अनुसार किया गया है।

इन तीनों गुणों के अर्थ स्वभाव के अनुसार भी किये जा सकते हैं। जैसे रजो गुणी ज्ञान की रोशनी में काम करता है। उसका ज्ञान संसार के ज्ञान पर निर्धारित होता है, अंदरूनी ज्ञान की रोशनी पर नहीं। तमो गुणी बिलकुल अंधेरे में होता है। ('तम' का अर्थ ही अंधेरा है।) उसके कार्य दिशाहीन, अर्थहीन होते हैं। सतो गुणी के पास ज्ञान का प्रकाश है। उसे राह तो दिखाई देता है, मगर सही तरह से नहीं। गुरबाणी कहती है कि अगर बिना ग्राहर के गुणों के बेचा जाए तो गुण ससता बिकता हैं, अर्थात् गुण की कदर नहीं पड़ती।

इसके विपरीत गुणों का ग्राहक जग्यासू मिल जाए तो गुण लाखों में बिकता है, भाव गुणों की कदर पड़ती है।

विणु गाहक गुणु वेचीऐ तउ गुणु सहघो जाइ॥

*३०३/१, ऐवरी टावर, जुहू-कोलीवाड़ा रोड, मुंबई-४०००४९

गुण का गाहकु जे मिलै तउ गुणु लाख विकाइ ॥

(पन्ना १०८६)

सभी तीनों गुण वालों के पास अंदरूनी अंधेरा होता है, जिसे 'माया' (माइआ) कहा गया है। माया के अंधेरे में वे काम तो बहुत करते हैं परन्तु पहुँचते कहीं भी नहीं :

— त्रै गुण बिखिआ अंधु है
माइआ मोह गुबार ॥ (पन्ना ३०)

— रज गुण तम गुण सत गुण कहीऐ
इह तेरी सभ माइआ ॥ (पन्ना ११२३)

इन तीनों गुणों से पार की भी एक अवस्था है, जिसे चौथा पद कहा गया है। इसे तुरीयावस्था (चौथी अवस्था, ब्रह्मलीनता) भी कहते हैं :

— त्रै गुण माइआ मोहु है
गुरमुखि चउथा पदु पाइ ॥ (पन्ना ३०)

— तीनि बिआपहि जगत कउ
तुरीआ पावै कोइ ॥ (पन्ना २९७)

— मन रे त्रै गुण छोडि चउथै चितु लाइ ॥

(पन्ना ६०३)

इस पद को, इस तुरीयावस्था को, इस त्रै गुण अतीत हालत को गुरबाणी में 'सहज' कहा गया है :

— त्रिहु गुणा विचि सहजु न पाईऐ
त्रै गुण भरमि भुलाइ ॥ (पन्ना ६८)

— चउथे पद महि सहजु है गुरमुखि पलै पाइ ॥

(पन्ना ६८)

'सहज' वो अवस्था है जो हमने खुद नहीं बनाई। हम इसे लेकर ही आए हैं। यह हमारा अंतर्निहित गुण है जो किसी कारण माया के तीन गुणों के तले दबा पड़ा है। माया का पत्थर हटा दो, यह 'सहज' अपने आप ही प्रकट हो जाएगा।

अग्नि (पावक) का सहज स्वभाव है—जलना। पानी का सहज स्वभाव है— नीचे की ओर बहना। हवा का सहज स्वभाव है— चलते रहना। यह सहज ही चलती रहती है। इसे चलाने के लिए कुछ विशेष नहीं करना पड़ता :

— ब्रहम गिआनी का इहै गुनाउ ॥
नानक जिउ पावक का सहज सुभाउ ॥

(पन्ना २७२)

इसी तरह चाँद का स्वभाव है— धरती के गिर्द घूमना। धरती का स्वभाव है— सूरज के गिर्द घूमना। ये अपने स्वभाव के अधीन स्वाभाविक ही अपना काम किए जा रहे हैं। इन्हें चलाने या रोकने के लिए कुछ विशेष नहीं करना पड़ता। इसी लिए गुरबाणी कहती है कि अपने सहज स्वभाव को समझो और उसी के अनुसार कार्य करो। इस अनुसार जो भी होता है, होने दो, विघ्न मत डालो :

— सहज सुभाइ होवै सो होइ ॥ (पन्ना २८२)

हम अपने भूले-भटके सहज स्वभाव को पहचानने का कोई यत्न नहीं करते, मात्र संस्कारों के अधीन कार्य किए जाते हैं, इसलिए हमारे ज्यादातर काम गलत होते हैं, अर्थहीन होते हैं और बंधन होते हैं।

जिस कार्य को करने में आनंद प्राप्त हो, ख़ुशी मिले, वही काम सहज है, वही हमारे स्वभाव के साथ मेल खाता है। जो काम मजबूरी में करना पड़े, वह सहज नहीं हो सकता। एक डाकिया चिट्ठियों का थैला उठाए फिरता है, घर-घर जाकर चिट्ठियाँ बाँटता है। वो यह काम पैसों के लिए करता है। इसके करने में उसे कोई ख़ुशी नहीं मिलती। एक नौजवान कसरत कर रहा है। वह भार उठा रहा है (Weight Lifting)। इसे करने में उसकी कोई मजबूरी नहीं, बल्कि उसे आनंद मिलता है। यह कर्म सहज है।

माँ बीमार है। पुत्र को उसके पास अस्पताल में बैठना पड़ रहा है। वह शरीर के कारण वहाँ अवश्य है, लेकिन इस काम में उसका मन शामिल नहीं, क्योंकि पुत्र ने कही जाने का कार्यक्रम बनाया था। यह कर्म सहज नहीं, क्योंकि इसमें न कोई गुण है, न उपकार :

बधा चटी जो भरे ना गुणु ना उपकारु ॥

(पन्ना ७८७)

तानसेन एक प्रसिद्ध गवैया हुआ है। वह अकबर के दरबार में रोज़ गायन करता था। एक दिन बादशाह ने उसके गुरु से गाना सुनने की इच्छा प्रकट की। तानसेन ने कहा, हजूर! वह अपनी मर्ज़ी से देर-सवेर गाता है। अकबर उसका गाना सुनने के लिए तैयार हो गया। लंबे इन्तज़ार के बाद आधी रात के करीब उसने प्रभु की स्तुति में गाना शुरू किया। अकबर का मन मुग्ध हो गया। काफ़ी देर चुप रहने के बाद उसने पूछा, ''तुम्हारा गुरु इतना अच्छा कैसे गाता है?'' उसने कहा, ''हजूर! मैं आप को खुश करने के लिए गाता हूं, आपका मूड़ देख कर गाता हूं, मन माने या न, मगर फिर भी मैं गाता हूं, जबकि मेरा गुरु बेगरज होकर गाता है, अंदर से गाना उठे तभी गाता है, सहज स्वभाव गाता है। बस, यही अंतर है। कर्म करने से सहजता नहीं आती। सहजता आ जाए तो कर्म खुद ही ठीक होने लगते हैं :

करमी सहजु न ऊपजै
विणु सहजै सहसा न जाइ ॥ (पन्ना ९१९)

गुरबाणी सुझाव देती है कि सेवा करो, क्योंकि इसमें मजबूरी नहीं होती। आदमी अपनी मर्ज़ी से सेवा में लगता है। इसमें शरीर और मन दोनों शामिल होते हैं, इसीलिए सेवा की उपमा है :

विचि दुनीआ सेव कमाईऐ ॥

ता दरगह बैसणु पाईऐ ॥ *(पन्ना २६)*

इसीलिए कहते हैं कि ''सेवा में ही मेवा है।'' अगर सेवा में मन शामिल नहीं, आनंद नहीं। कार-सेवा चल रही है, गाँवों से लोग ट्रकों में आ रहे हैं, तन-मन से सेवा कर रहे हैं, भार उठा रहे हैं, दस-दस घंटे तपती धूप में पसीना बहा रहे हैं। एक ही विचार है मन के अंदर कि उनकी सेवा सफल हो।

इसके विपरीत वे लोग हैं, जो बेमन से एक-आधी ईंट उठा लेते हैं। पूरा ध्यान कपड़ों में है कि कहीं ये गंदे न हो जाएँ। यह सेवा दिखावे के लिए है। एक कर्मकांड है, जो वे निभा रहे हैं। इस प्रकार की सेवा में सहज नहीं, क्योंकि सेवा की भावना उनके अंदर नहीं है।

हमारे में से ज्यादातर ने सेवा वाले मुखौटे पहने हुए हैं। सोचते कुछ हैं, करते कुछ हैं। हमारी सोच संदेह पर टिकी हुई है। किसी को किसी पर भरोसा नहीं। हम अंदर से ज़हरीले हैं, परन्तु बाहर से मीठी-मीठी बातें करते हैं।

संसार भर की राजनीति अधिकांशत: ठगों की राजनीति है। जीवन में सत् नहीं, कथनी-करनी में समानता नहीं। ऐसे मनुष्यों में सहज नहीं हो सकता। सहज में झूठ-फ़रेब के लिए जगह नहीं होती, इसलिए अंदर-बाहर से एक होना पड़ता है। अगर किसी को अपने झूठे जीवन का डर नहीं तो वह कभी सहज में नहीं हो सकता :

भै विचि निरभउ पाइआ ॥
ता सहजै कै घरि आइआ ॥ *(पन्ना ५९९)*

अपने जीवन में सहजता लाएं! माया के त्रैगुणी स्वभाव से अपने को बचाएं! न अपने ज्ञान को ठीक समझें और न अपने अज्ञान को, क्योंकि सब माया से प्रभावित हैं। अपने अंदरूनी स्वभाव को समझें, वही त्रै-गुणी अतीत है। सहज हमारा स्वभाव है। इसे अपने अंदर से ढूँढना पड़ता है। बाहरी कर्मकांडों से प्राप्ति नहीं होती :

पड़े सुने किआ होई ॥
जउ सहज न मिलिओ सोई ॥ *(पन्ना ६५५)*

सहज स्वभाव का मिलना ज़रूरी है। जिस दिन उसका पता मिल जाएगा, तो यह चिंता करने की ज़रूरत नहीं रहेगी कि आप क्या कर रहे हो? जो भी करोगे, ठीक ही होगा। जो भी सहज स्वभाव में होता है, होने दो :

सहज सुभाइ होवै सो होइ ॥ *(पन्ना २८२)*

ख़बरनामा

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की सभा में बंदी सिंघों की रिहाई सहित कई पंथक मुद्दों पर प्रस्ताव पारित

श्री अमृतसर : २ सितंबर : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने बंदी सिंघों की रिहाई को लेकर सिक्ख जत्थेबंदियों और पंथक-हितैषियों के सहयोग से एक विशाल सार्वजनिक लहर चलाने का फ़ैसला किया है। इस हेतु आरंभ किए जाने वाले संघर्ष की शुरूआत १२ सितंबर से की जायेगी। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के मुख्यालय सरदार तेजा सिंघ समुंदरी हाल में शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के समूह सदस्य साहिबान की हुई सभा में बंदी सिंघों की रिहाई को लेकर अहम प्रस्ताव पारित किये गए, जिसके अंतर्गत संघर्ष आगे बढ़ाया जायेगा। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी की अध्यक्षता में हुए इस पंथक सभा में विभिन्न प्रवक्ताओं ने बंदी सिंघों के मुद्दे पर सरकारों की उदासीनता पर गहरी चिंता प्रकट की और भविष्य में लोक लहर चलाए जाने का सुझाव दिया।

इस अवसर पर शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी ने अपने संबोधन के दौरान गत समय में शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की तरफ से बंदी सिंघों की रिहाई के लिए किये गए प्रयासों की विस्तारपूर्वक जानकारी देते हुए सरकारों के अड़ियल रवैये की कड़ी निंदा की तथा उपस्थित सदस्यों के सुझाव के अनुसार भविष्यत् संघर्ष को लेकर प्रस्ताव पेश किये, जिन्हें सभी सदस्यों ने सर्वसम्मति के साथ जयकारों की गूँज में स्वीकृति प्रदान की। एडवोकेट धामी की तरफ से प्रस्तुत प्रस्ताव में स्वीकृत हुआ कि १२ सितंबर, २०२२ ई. को पंजाब, हरियाणा एवं चंडीगढ़ में स्थित जिला मजिस्ट्रेट और यूटी प्रशासक के कार्यालय के सामने शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की तरफ से धरने लगाए जाएंगे। इसमें शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के सदस्य साहिबान काले चोले और गले में जंजीरें डाल कर सरकारों के रवैये के विरुद्ध रोष प्रकट करेंगे। इसके साथ ही लोक लहर सृजित करने के लिए दस्तख़त मुहिम भी आरंभ की जायेगी, जिसके अंतर्गत ऐतिहासिक गुरु-स्थानों, शहरों के मुख्य स्थानों, कसबों और गाँवों में जाकर संगत से फार्म भरवाए जाएंगे। पारित प्रस्ताव के अनुसार शहरों के मुख्य चौराहों पर बंदी सिंघों की रिहाई से सम्बन्धित फ्लेक्स बोर्ड लगा कर काउन्टर स्थापित किये जाएंगे, जहाँ यातायात वाले लोग भी दस्तखत मुहिम में शामिल हो सकेंगे। इस रोष के अगले पड़ाव के तौर पर शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के समूह सदस्य साहिबान सामूहिक रूप से पंजाब के गवर्नर को मिल कर दस्तख़त किये फार्म एवं माँग-पत्र सौंपेंगे।

सभा में बंदी सिंघों की रिहाई के लिए कानूनी हल के लिए सेवामुक्त सिक्ख जजों, सीनियर सिक्ख वकीलों और सिक्ख पंथ के विद्वानों की

एक विशेष मीटिंग बुला कर राय लेने का भी फ़ैसला किया गया, ताकि इस मामले से सम्बन्धित कानूनी कार्यवाही आरंभ करने और सरकारों के साथ पत्र-व्यवहार करने में विशेषज्ञों का सहयोग लिया जा सके।

इसके अलावा शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के सदस्यों के इजलास में अल्पसंख्यक दर्जे को राज्यों के आधार पर निर्धारित करने के लिए सुप्रीम कोर्ट में एक व्यक्ति द्वारा दायर की गई पटीशन के ख़िलाफ़ पूर्ण शक्ति के साथ पैरवी करने का भी एलान किया गया। इसे लेकर कानूनी तथा अन्य पक्ष से शिद्दत के साथ कार्यवाही करने की वचनबद्धता प्रकट की गई। इस प्रस्ताव में भारत सरकार को अल्पसंख्यकों के हक मारने वाली पटीशन के विरुद्ध अल्पसंख्यक कौमों का पक्ष मज़बूत करने तथा कानूनी पक्ष से प्रतिनिधित्व करने की भी अपील की गई।

सभा के दौरान धर्मों के सिद्धांतों और धर्म-स्थानों पर हो रहे हमलों की भी निंदा की गई तथा तरनतारन के निकट ईसाई धर्म के चर्च में तोड़फोड़ करने को भी दुर्भाग्यपूर्ण करार दिया गया।

सभा में शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी के अतिरिक्त पूर्व प्रधान भाई गोबिंद सिंघ लौंगोवाल, महासचिव जत्थेदार करनैल सिंघ पंजोली, स. सरवन सिंघ कुलार, भाई गुरचरन सिंघ (गरेवाल), भाई रजिंदर सिंघ महिता, स. अमरीक सिंघ शाहपुर, बीबी किरनजोत कौर, भाई अमरजीत सिंघ (चावला), स. मिट्ठू सिंघ काहनेके, भाई मनजीत सिंघ, स. कुलवंत सिंघ मंनण, बाबा गुरमीत सिंघ त्रिलोकेवाला, भाई राम सिंघ, स. सरबंस सिंघ माणकी, बाबा गुरप्रीत सिंघ (रंधावा) ने भी विचार पेश किये।

बंदी सिंघों की रिहाई के लिए हर स्तर पर संघर्ष करेंगे : एडवोकेट धामी

श्री अमृतसर : १२ सितंबर : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा बंदी सिंघों की रिहाई से सम्बन्धित पंजाब में डिप्टी कमिशनरों के कार्यालय में धरने लगा कर राष्ट्रीय रोष का प्रकटावा किया गया। ज़िला मुख्यालयों पर लगाए रोष धरनों के दौरान शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के सदस्यों और कर्मचारियों ने काले चोले व जंजीरें पहन कर शमूलियत की। इसके अलावा पंथक-हितैषी भी रोष धरनों का हिस्सा बने। श्री अमृतसर में डिप्टी कमिशनर कार्यालय में लगाए गए धरने का नेतृत्व शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी ने किया। इससे पहले श्री दरबार साहिब के निकट स्थित गुरुद्वारा सारागढ़ी साहिब में इकट्ठ हुआ, जहां से जयकारों और बंदी सिंघों की रिहाई के नारों की गूँज में रोष मार्च डी. सी. कार्यालय पहुँचा। इस मार्च के दौरान शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी तथा शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के सदस्य खुली गाड़ी में सवार थे और शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के कर्मचारी दो पहिया वाहनों पर चल रहे थे।

डिप्टी कमिशनर कार्यालय में रोष धरने में

विभिन्न प्रवक्ताओं ने संबोधित करते हुए बंदी सिंघों की रिहाई को लेकर केंद्र व राज्य की सरकारों द्वारा अपनाई जा रही पक्षपात वाली नीति की कड़ी आलोचना की और पंथक आवाज़ न सुनने पर कड़ा संघर्ष आरंभ करने का संदेश दिया। इस अवसर पर शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी ने अपने संबोधन में कहा कि देश का कानून सबके लिए एक समान है और संविधान में भी प्रत्येक को बराबर के अधिकार प्राप्त हैं, परन्तु दुख की बात है कि बंदी सिंघों के मामले में सरकारें न्याय नहीं कर रही। उन्होंने कहा कि किसी भी गुनाह की निर्धारित सज़ा होती है, जो बंदी सिंघ पूरी कर चुके हैं। सरकारें समय के हालात की भेंट चढ़े सिक्ख बंदियों को जानबूझ कर उनके अधिकारों से वंचित रख रही हैं। उन्होंने कहा कि बंदी सिंघों की रिहाई सिक्ख पंथ का अहम मुद्दा है और इस अधिकारिक मांग के लिए हर स्तर पर संघर्ष किया जायेगा। इसके लिए कुर्बानी की ज़रूरत भी पड़ी तो पीछे नहीं हटेंगे। उन्होंने कहा कि तीव्र रोष लहर जारी रखने के साथ-साथ कानूनी पक्ष विचारने के लिए १७ सितम्बर को चंडीगढ़ में सेवामुक्त सिक्ख जजों व सीनियर वकीलों की एक सभा बुलाई गई है। यह सभा अति महत्वपूर्ण है और मानवाधिकारों की आवाज़ उठाने वाले वकील इसमें शामिल होकर कीमती सुझाव दे सकते हैं।

उन्होंने भविष्यत् संघर्ष की रूप-रेखा के बारे में बात करते हुए कहा कि सिक्ख कौम अब चुप नहीं बैठेगी और जल्द ही अगले पड़ाव के अंतर्गत दस्तख़त मुहिम की शुरूआत की जायेगी। उन्होंने बंदी सिंघों की रिहाई के लिए कार्य कर रहे पंथक-हितैषियों को सामूहिक रूप से सिक्खों की सुप्रीम संस्था शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के नेतृत्व में चलने की अपील की। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान ने इस अवसर पर देश भर में अल्पसंख्यक वर्ग सिक्खों के साथ हो रहे अन्याय का भी जिक्र किया तथा केंद्र सरकार को सिक्खों के साथ हो रहे भेदभाव को रोकने के लिए ज़रूरी कदम उठाने के लिए कहा।

इस अवसर पर शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की कार्यकारिणी कमेटी के सदस्य स. हरजाप सिंघ सुलतानविंड, स. अमरजीत सिंघ बंडाला, स. जोध सिंघ समरा, सदस्य भाई रजिंदर सिंघ महिता, स. सुरजीत सिंघ भिट्टेवड्डु, एडवोकेट भगवंत सिंघ सिआलका, भाई राम सिंघ, भाई अजायब सिंघ अभ्यासी, स. बावा सिंघ गुमानपुरा, स. बलजीत सिंघ जलालउसमां, स. गुरिंदरपाल सिंघ रणीके, स. बिकरमजीत सिंघ कोटला, स. अमरजीत सिंघ भलाईपुर, स. कुलदीप सिंघ तेड़ा, दमदमी टकसाल के मुख्य प्रवक्ता बाबा सुखदेव सिंघ, सिक्ख नेता स. जसबीर सिंघ घुंमण, अतिरिक्त सचिव स. प्रताप सिंघ, स. बिजै सिंघ, ओएसडी स. सतबीर सिंघ धामी, उप सचिव स. कुलविंदर सिंघ रमदास, स. बलविंदर सिंघ काहलवां, स. हरजीत सिंघ लालूघुंमण, स. गुरमीत सिंघ बुट्टर, स. हरजिंदर सिंघ कैरोंवाल, स. गुरिंदर सिंघ, स. तेजिंदर सिंघ, स. निरवैल सिंघ, स. गुरचरन सिंघ कुहाला, स. कुलदीप सिंघ रोडे, श्री दरबार साहिब के मैनेजर स. सुलक्खण सिंघ भंगाली, पूर्व सचिव स. जोगिंदर सिंघ अदलीवाल, स. बलविंदर सिंघ जौड़ासिंघा, स. कुलवंत सिंघ आदि उपस्थित थे।

मोर्चा गुरुद्वारा गुरु का बाग

Registered with RNI at No. PUNHIN/2007/21665
Postal Registration No. L-1/PB-ASR/008/2020-22 Licensed to Post without Pre-Payment No. PB/R-001/2020-22

GURMAT GYAN October 2022

DHARAM PARCHAR COMMITTEE,
Shiromani Gurdwara Parbandhak Committee, Sri Amritsar Sahib (PUNJAB)

शहीद भाई करम सिंघ

शहीद भाई प्रताप सिंघ

Owner : Shiromani Gurdwara Parbandhak Committee. Publisher & Printer : S. Manjit Singh. Printed at Golden Offset Press, Gurdwara Sri Ramsar Sahib, Sri Amritsar. Published from SGPC office, Teja Singh Samundri Hall, Sri Amritsar. Editor : Satwinder Singh
Date: 7-10-2022